।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 मई-जून 2026 वर्ष 19 अंक 2-3

कुल पृष्ठ - 36 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

यह सुन व देखकर यह जीव बहुत पीड़ित होकर मन में कहता है कि स्त्री व परिवार आदि के साथ जो इतना प्रेम रखा था सो सब व्यर्थ ही गया आज अन्त समय में परलोक के लिये कोई भी साथ नहीं देता। फिर सद्‌गुरु सन्तों जिन के साथ चार आना प्रीति रखी थी, उनका ध्यान धर कर रोकर कहता है कि हे भगवन्‌ ! मुझे स्वदेश माने परलोक से चिट्ठी आई है कि अब जल्दी वापस चले आओ। सो अब परलोक जा रहा हूँ, क्या आप कुछ सहायता करेंगे? जिन लोगों में मेरा पक्का विश्वास था उन लोगों ने तो धोखा दे दिया। इस पर परम दयालु गुरुदेव विश्वास दिलाते हुए कहते हैं कि तात! आप जरा सी भी चिन्ता न करें, हम आपको गुण-ज्ञान-भक्ति की टिकट दिलवा कर आत्मज्ञान रूपी जहाज में चढ़ाकर आपको अपने आदि अविनाशी अमर लोक में पहुँचाकर आयेंगे।

सद्‌गुरु देव के ये सन्तोषजनक व प्रोत्साहन दिलाने वाले वचन सुन कर, पश्चाताप कर दिल में कहता है कि अगर पहले से ही सद्‌गुरु सन्तों के साथ रुपये का रुपया प्रीति रखता तो बहुत ही अच्छा होता ! परन्तु फिर भी अच्छा हुआ जो सन्तों के साथ चार आना तो प्रीति रखी, जो इस विपत्ति के समय में काम आयी। यह सिद्धान्त सुना कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि सब जीवों के लिये यह बहुत जरूरी है कि शुभकर्मों को ही परलोक का साथी बनाने का भरसक प्रयास करें।

।।भज़नु रागु ज़िलो ।।

परमेश्वर जे प्रेम बिना ॿी, जूठी नातेदारी आ ।।टेक ।।
मूर्ख माया खे तूँ ज़ाणिजि, दम पल जी दिलिदारी आ।
बाग़ बग़ीचा सुन्दरु माड़ियूँ, जूठी दुनिया सारी आ ।। १ ।।
जंहि नारीअ सां प्रीति रखी तो, सारी उमिरी गुज़ारी आ।
साणु हले थी दर तांई सा, खुदि मतिलब जी नारी आ ।। २ ।।
कुटुम्ब कबीलो कमि ना ईंदुइ, जंहिंसां दिल तो धारी आ।
मरण पुज़ाणां घड़ी न रखंदइ, जूठी तिनिजी यारी आ ।। ३ ।।
मास हदनि जी देही जा तो, शौंकु रखी सींगारी आ।
सा भी तोसां साणु न हलंदी, थियणी खाकि जी खारी आ ।। ४ ।।

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

जूठे जग सां प्रीति रखी जिनि, तिनिजी हिति हुति खुवारी आ।
कहे ''टेऊँ'' करि प्रीति प्रभूअ सां, जंहि में जै जैकारी आ ।।५ ।।

।। भजनु रागु भैरवी ।।

ध्यानु हरीअ जो धारे, सचो सुखु माणि सदा ।। टेक ।।
ध्यान बिना सुखु कीन मिले थो, ताकु अन्दर जो कीन खुले थो।
वचनु इहो वीचारे, सचो सुखु माणि सदा ।। १ ।।
ध्यान बिना ना शान्ति अचे थी, हरि रंग में दिलि कीन रचे थी।
ध्यान सां मन खे मारे, सचो सुखु माणि सदा ।। २ ।।
कहे ''टेऊँ'' हरि ध्यानु धरे तूँ, ध्यान सां प्रापति ज्ञानु करे तूँ।
लेखो जम जो वारे, सचो सुखु माणि सदा ।। ३ ।।

उपर्युक्त भजन बोल कर गुरु महाराज जी ने रात को एक बजे सत्संग समाप्त किया। इस तरह सत्संग का कार्यक्रम नियमानुसार चलता रहा और गाँव के लोगों का प्रेम भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगा। सक्खर शहर व पास-पड़ोस के लोग भी बहुत आने लगे। चार-पाँच दिन बीतने पर भाई कंवरराम साहिब भी पधारे। सायं तीन बजे भाई जुड़ियाराम जी ने सद्गुरु महाराज जी को आकर बताया कि भाई कंवरराम साहिब व और भगत भी उनके साथ में आये हैं। उन के साथ सत्संग का कार्यक्रम भी बना कर आये हैं। आप श्री चरणों का तो वही पहले वाला समय होगा और आपके प्रवचन के बाद तीन भगत मण्डलियों के और प्रवचन होंगे। फिर प्रातः चार बजे भाई कंवरराम साहिब स्वयं भजन करेंगे। इसके सिवा अभी लगभग चार बजे कंवरराम साहिब आपसे मिलने के लिये आयेंगे।

श्री जुड़ियाराम जी यह समाचार सुना ही रहे थे तो खाही गाँव के बसन्तराम, प्रेमानन्द, गणेशानन्द, मुरलीधर, भाई गोविन्दराम, भाई सोमनदास, भाई परचाराम और रुस्तम गाँव के भाई आवतराम, भाई ठाकुरियाराम, भाई बीखाराम तथा और भी कई प्रेमी बागड़जी गाँव में गुरु महाराज जी के पास आये। उन सब को देख कर गुरु महाराज जी मुस्कुराते हुए कहने लगे कि तुम सब लोग यहाँ अचानक कैसे आ गये? इस पर भाई गोविन्दराम जी ने कहा कि स्वामी जी ये सब लड़के अपने माता-पिता को बताए बिना ही चोरी छुपे भाग कर आए हैं। सम्भव है कि कल इनके सम्बन्धी इनको लेने आयें। सेठ नोतनदास जी भी कल आवतराम को लेने आयेंगे। इतने में भाई कंवरराम साहिब जी भी अपनी मण्डली व अन्य भक्तगणों के साथ गुरु महाराज जी के यहाँ पधारे।

भाई कंवरराम साहिब जी को आया देख कर गुरु महाराज जी ने उठ कर भाई कंवरराम साहिब और साथ आए हुए भक्तों के साथ यथायोग्य मिल कर भाई कंवरराम साहिब को अपने आसन पर बिठाया, बाकी सब भक्तों को सन्तों के साथ यथोचित स्थान पर आसन देकर बिठाया। फिर सब को जलपान करा कर गुरु महाराज जी भाई कंवरराम साहिब जी को कहने लगे कि अब आप कुशल समाचार बताने की कृपा करें। इस पर भाई कंवरराम साहिब जी कहने लगे कि भगवान की कृपा से सब आनन्द-मंगल है, हम लोग जरवारनि गाँव में रहते हैं, वैसे हमारा व्यवसाय तो दुकान व खेती-बाड़ी ही है। जब कोई प्रेमी निमन्त्रण देकर अपने यहाँ बुलाता है, तो वहाँ पर भी चले जाते हैं। एक बार आपके तरफ के उडेरेलाल नगर में भी गए थे। आज सुबह दस बजे यहाँ आये हैं और फिर यहां से चौदह तिथि को माझन्द नगर में बाबा गोविन्ददास साहब जी के निर्वाण दिवस के उत्सव पर जायेंगे। हमें किसी ने आकर यह शुभ-समाचार सुनाया कि हैदराबाद जनपद के तरफ के वैरागी सन्त चक गांव की तरफ आये हुए हैं। सो विचार आया कि सन्तों के दर्शन कर आयें, सो यहां आकर आपके दर्शन कर बहुत खुश हुए हैं। हमने अपना समाचार सुना दिया। अब आप भी अपने कुशल समाचार सुनायें। इस पर गुरु महाराज जी कुशल समाचार बताते हुए कहने लगे कि वैसे तो हम सब एक ही देश के रहने वाले हैं। फिर ईश्वर इच्छा व स्वेच्छा से आप लोग जरवारनि गांव में आये और हम लोग हैदराबाद जनपद अन्तर्गत खण्डू गांव में आये। हमारा व्यवसाय भी दुकान व खेती-बाड़ी ही है। वैसे सब सन्त दुकान व खेती-बाड़ी का ही काम करते हैं। निम्नलिखित पद बोल कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 मई-जून 2026

वर्ष 19 — अंक 2-3

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹200	₹2000
दो वर्ष के लिये	₹400	₹4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : prempraka shsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कवित्त

सांई टेऊँराम जन्म-गाथा

फूलवंशी क्षत्रिय कुल के चेलाराम थे भक्त महान,
पत्नी कृष्णा देवी संतों की सेवा कर देतीं दान।
करें कामना पुत्र रत्न की हो सत्पुरुष परम ज्ञानी,
चालीस दिन का व्रत कीना सपने में गूँजी प्रभुवानी।
'एवमस्तु' सुन माता का आंचल महका मन उठी हिलोर,
शीतल मंद पवन बहती कहने को स्वागत आतुर भोर।
सिंधु देश में खण्डू ग्राम की माटी के जागे थे भाग,
सिंधु नदी की लहरें झूमीं दसो दिशा में गूँजे राग।
सम्वत् 1944, आषाढ़ शुक्ला की थी षाष्ठी,
जन्म हुआ शिशु टेऊँराम का हुई मगन सारी सृष्टि।
थे तेजस्वी रवि से सौम्य चन्द्र से, पाई बुद्धि प्रखर,
लौ लागी हरि से बालकपन में ही प्रतिभा हुई मुखर।
सेवा करते भक्त जनों की जिस दिन करते प्रभु का ध्यान,
रस में पगे भजन गाते वाणी से बरसे अमृत ज्ञान।
गुरु पाए स्वामी आसूराम से विधिपूर्वक लीनी दीक्षा,
सत्संग, मानव सेवा से ना बड़ी कोई दूजी शिक्षा।
माया थी हारी स्वामी से ऐसे थे प्रकाश के पुंज,
जन-जन को सन्मार्ग दिखाकर महकाया जीवन का कुंज।
'सत्नाम साक्षी' मंत्र दिया निखरा जीवन का दिव्य स्वरूप,
जो श्रद्धा से जपे पाए सद्गति ना पड़े मोह के कूप।
षट्रिपु का विनाश करने की जन-जन को बतलाई युक्ति,
सांचे मन से नाम जपो पाओगे भव बंधन से मुक्ति।

'सुधा जौहरी', जयपुर

अनुक्रम	अनुक्रमणिका विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1-2
02.	दो शब्द ''चालीसा''	4-5
03.	दर्शन से किया चालीहा व्रत पूर्ण-सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पर विशेष	6-7
04.	किसने भेजा भोजन-प्रसाद, कौन था लाने वाला, उसकी लीला वो ही जाने	8
05.	सद्गुरु टेऊँराम पुण्यतिथि पर विशेष आलेख	9-10
06.	प्रेम-सेवा और साधना की परम्परा-श्री अमरापुर स्थान व श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय	11
07.	तपोनिष्ठ सद्गुरु श्री टेऊँराम बाबा के पावन जीवन की झलकियां	12-13
08.	सूचना-आतिशबाजी उपयोग न करें	13
09.	श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी अष्टोंत्तरशतनामावली (108 नाम)	14-15
10.	सच्चा सौदा नाम का	16
11.	सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गुण महिमा के पावन प्रसंग	17-18
12.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 140वां प्रकटोत्सव सूचना	19-20
13.	संत शिरोमणि सद्गुरु सांई टेऊँराम जी साहिब	21-23
14.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 97वां जन्मोत्सव समाचार	24
15.	कुरुक्षेत्र धाम में 700 श्लोकीय हवन-यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न समाचार	25
16.	परम पूज्य आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का चालीसा प्रारंभ	26
17.	आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का 84वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न समाचार	27
18.	शास्त्रों के अनुसार सन्तान कितने प्रकार की होती है ?	28-29
19.	पावन-प्रसंग (दया की महिमा)	30
20.	सेहत-बरसात के मौसम में स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण सुझाव	31
21.	भजन श्री हरकेश वधवा	32
22.	अमरापुर गमन	33
23.	व्रत-पर्व-उत्सव, प्रेरक प्रसंग	34
24.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	35
25.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	36

दो शब्द

चालीसा

भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में चालीसा का अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान है, हिन्दू धर्म में चालीसा की उपासना एवं मान्यता सर्वोपरि है। चालीसा आराध्य की कृपा पाने का श्रेष्ठ साधन है। चालीसा को पढ़ते रहने से व्यक्ति के मन में साहस, आत्म विश्वास और पराक्रम का संचार होता है। भक्त (साधक) द्वारा भगवान इष्टदेव या आराध्य को प्रसन्न करने के लिये और अपनी समस्याओं के निवारण (दूर) करने के लिये सरल भाषा में की गई प्रार्थना को ''चालीसा'' कहा जाता है, जिसमें आप अपने आराध्य देव जी की स्तुति करते हैं। इसमें चालीस पंक्तियां रहती है (यह पद्यात्यक 40 छन्द की होने के कारण ''चालीसा'' कहलाती है) इसमें आराध्य देव द्वारा किये गये कार्यो के बारे में दर्शाया गया होता है। उनका हम यशोगान करते है, जिससे वह प्रसन्न हो जाते है। सुनने और पढ़ने में आनंद आता है। अत्यंत सरल भाषा में लिखा होने से इसे आसानी से पढ़ा जा सकता है। मंत्रों के जाप में कठिनाई हो सकती है परन्तु चालीसा के पठन में कोई कठिनाई नहीं होती, चालीसा में प्रत्येक पंक्ति का अलग-अलग महत्व होता है।

महापुरुषों के मतानुसार श्री तुलसी दास जी द्वारा रचित हनुमान चालीसा के पश्चात् बहुत से विद्वान महानुभावों द्वारा अपने-अपने आराध्य के सम्बन्ध में चालीसा की रचना की गईहै।

पाठ करने की विधिः

- सर्वप्रथम-जिस स्थान पर पाठ कर रहे हैं वह स्थान पवित्र होना चाहिए, साथ ही स्वयं (साधक) को भी स्वच्छ अवस्था में स्थिर मन से, एकाग्रता के साथ चालीसा का पाठ करना चाहिये।
- बैठने के लिये ऊनी या कुशा के आसन का उपयोग करना चाहिए।
- यदि आप अपने निवास स्थल पर रहकर जिन आराध्य देव के चालीसा का पाठ कर रहे है, उन आराध्य देव का ध्यान कर या आराध्य देव के चित्र या मूर्ति के सम्मुख-दीपक जलाकर साथ में एक जल से भरा लोटा समीप में रखकर पाठ करें। कम से कम एक बार से लेकर तीन बार तक चालीसा का पाठ कर सकते हैं। पाठ पूर्ण होने के उपरान्त जल को प्रसाद की तरह ग्रहण करें, साथ ही थोड़ा-थोड़ा जल अपने निवास स्थल में छिड़क दें, इससे आप सकारात्मक प्रभाव महसूस करेंगे साथ ही आपके घर से सभी नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जावेगी।
- प्रयास करें कि चालीसा का पाठ प्रतिदिन एक ही समय पर करें, तो बहुत अच्छा होगा।
- विशेष परिस्थितियों में यात्रा के समय या सोते समय भी चालीसा का पाठ कर सकते हैं।

जैसा कि आप सभी सुविज्ञ पाठकों को विदित ही है कि मूर्तिमान ब्रह्मस्वरूप आचार्य पूज्य सद्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के इस धराधाम पर अवतरित होने के मंगल पावन दिवस के 40 चालीस दिवस पूर्व अर्थात् दिनांक 09 जून से 19 जुलाई 2026 तक चालीसा महोत्सव पूर्ण श्रृद्धा-उमंग-व उत्साह के साथ सम्पूर्ण विश्व में निवासरत माननीय / सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जनों द्वारा देश विदेश में स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

सब जीवों को परलोक के मार्ग में काम आने वाला सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिए जो कभी भी पुराना न हो, न ही बेचने पर घाटा पड़े। वह है निष्काम सत्कर्म एवं नाम-स्मरण

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

पर पूर्ण मनोयोग एवं श्रृद्धाभाव के साथ मनाया जा रहा है।

चालीसा का पाठ करने के लाभः-

हर एक साधक के पृथक-पृथक अर्थात् अलग-अलग अनुभव होते है, किसी को कुछ लाभ होता है तो किसी को कुछ लाभ होता है। ऐसे लाभ जो हर किसी को मिलते हैं :-

- मानसिक शांति मिलती है।
- धन धान्य एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है साथ ही स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- जाने अनजाने में हमारे द्वारा किये गए पाप नष्ट हो जाते है।
- लिये जाने वाले निर्णय सही होने लगते है।
- निरन्तर पठन से व्यक्तित्व में बदलाव आने लगता है।
- आत्म विश्वास में वृद्धि होती है साथ ही इच्छा शक्ति मजबूत होती जाती है।
- इसके पठन से हमारा आध्यात्मिक बल बढ़ता है, आध्यात्मिक बल से ही हम जीवन की हर परेशानी से छूट सकते है।

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान का सुफल (परिणाम) इस बात के ऊपर निर्भर है कि हम अपने लक्ष्य के प्रति कितने समर्पित हैं। अपने आराध्य सर्व समर्थ मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के अमृतमयी वचनों एवं पावन श्री चरणों में कितनी श्रद्धा एवं अटूट विश्वास है।

अपनी माता के वचनों पर अटल विश्वास कर मात्र 5 वर्ष के बालक ''ध्रुव'' को भगवान के दर्शन हुए, वह भगवान की गोद में बैठा। ठीक इसी तरह 5 वर्ष का छोटा सा बालक (भक्तराज प्रहलाद) जिसे भगवान पर इतना विश्वास था कि वह भगवान के लिए कुछ भी कर सकता है उसके लिए भगवान स्वयं खम्भा फाड़कर प्रकट हो गये थे।

''सद्गुरु करुणा रूप हैं, सद्गुरु शक्ति भण्डार।
कह टेऊँ विश्वास जिस, तांका बेढ़ा पार।।''
''मन सद्गुरु के द्वारे चलिए, सद्गुरु गरीब नवाज़ हैं,
जो श्रद्धा से उसकी ओट ले,
तिस जन की वो राखत लाज है।।''

(श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ)

इस चालीस दिवसीय अनुष्ठान में कृपया सभी माननीय, सम्माननीय प्रेम प्रकाशी जन यह सुनिश्चित करें :-

- भूलकर भी तामसिक भोजन या मदिरा का सेवन नहीं करें।
- क्रोध पर नियत्रंण करने एवं मिथ्या व कटूवचन न बोलने का ईमानदारी से प्रयत्न करें।
- किसी भी प्राणी मात्र (जलचर, नभचर एवं थलचर) को पीड़ा नहीं पहुंचाएं।
- परिवार में माता - पिता व वृद्धजनों का अपमान व अव्हेलना न करें अपितु उनकी सेवा करने का व्रत लें।
- समस्त प्राणी मात्र के प्रति
- ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।''की मंगलकामना करें।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि चालीसवें दिन हमारे ऊपर परम आराध्य मंगलमूर्ति आचार्य प्रवर पूज्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज की अहेतुकि कृपा अवश्य बरसेगी साथ ही हमारे जीवन में निर्भयता, निश्चिंतता और निशोकता अवश्य आवेगी।

- संपादक, प्रेम प्रकाश संदेश

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश दुनिया में कहने वाले मनुष्य बहुत हैं, करने वाला कोई विरला है।

सद्गुरु टेऊँराम चालीहा अनुष्ठान पर विशेष

दर्शन से किया चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय।
कह टेऊँ हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय।

संतों-महापुरुषों का इस धरा धाम पर अवतरण भी अनुपम-विलक्षण-दिव्यतम होता है, उनके आने का उद्देश्य-- मानव के मन को उस अविनाशी प्रभु परमात्मा की ओर मोड़ना है जिसके लिए जीव का इस अमोलक मानव देह में आना हुआ. महापुरुषों के मंगल प्राकट्य के इतिहास इस बात के प्रमाण हैं.

माता कृष्णा देवी जी

सिंध हिंद के महानतम संत शिरोमणि, महायोगी, युगपुरुष, सर्व उपमा योग्य, धन धन बाबा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है! **सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही 40 दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था. चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान शिव जी ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं. ऐसा आश्वासन (वरदान) पाकर माता कृष्णादेवी ने श्रद्धा भक्ति-भाव से 41 वें दिन उपवास पूरा किया. समय पाकर माता को तपस्या का फल मिला. और हम सबके कल्याणकारक ईश्वरांश मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा-धाम सिंध टंडा आदम के खंडू गांव में अवतरण लिया.**

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो. इसी श्रद्धा-प्रेम से आज समस्त संसार इस चालीस दिवसीय चालीहा व्रत उपासना पर्व को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते है और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्वक सत्कार्य भक्तों द्वारा किये जाते है.

चालीहा का महात्मय बहुत पुराना है. भगवान श्री झूलेलाल चालीहा महोत्सव भी सर्व मनोरथ सिद्ध करने हेतु भक्तों द्वारा मनाया जाता है. साथ ही अनेक देवी-देवताओं के 'चालीसा' भी प्रसिद्ध हैं- **शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, झूलेलाल चालीसा, दुर्गा चालीसा और साईं टेऊँराम चालीसा आदि.** चालीहा महोत्सव के अन्तर्गत इसका नित्य नियम से पाठ करने से मनइच्छित फल की प्राप्ति होती है.

सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह मर्मस्पर्शी प्रसंग, **"साईं टेऊँराम चालीहा व्रत उपासना"** तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी, इससे '**भक्त और भगवान की प्रगाढ़ता**' के बारे में पता चलता है.

卐 माता पदीबाई को दर्शन देना 卐

यह बात उस समय की है जब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की प्यास लिए गौंसपुर के भाई मनाराम की धर्मपत्नी **'माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है'** और वह प्रभु परमात्मा- गुरुदेव के दिये अखण्ड नाम का सुमरण कर रही है, उसका संकल्प है कि जब तक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

शास्त्रों एवं संतो की वाणी का अभ्यास करने से आपके मन का दर्पण साफ होगा। यदि मन निर्मल है तो आप प्रभु का दर्शन कर सकते हैं।

रहेगा. बड़ा ही कठोर तप चल रहा था.ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी बाई ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया. माता पदी बाई ने व्रत पूरा हो जाने पर कमरे से निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ोस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया. माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि मेरे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुनिष्ठा अटूट है तो मेरे घर **'सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा'** जरूर आएँगे जब तक स्वामी जी घर दर्शन देने नहीं आयेंगे तब तक मैं बाहर नहीं आऊँगी । मैं चिरकाल तक प्रतीक्षा करूंगी । जिस प्रकार माता शबरी को भगवान श्रीराम जी के दर्शनों की प्रतीक्षा (प्यास) थी, वैसे ही आज इस माता को भी दर्शनों की प्यास थी । दर्शन के बाद ही चालीसा व्रत पूर्ण करूंगी । यह मेरा दृंढ संकल्प है ।

सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

गुरु महाराज जी माता के स्थान से बहुत दूर थे थक हारकर कंधकोट व गौंसपुर के पंचों ने टण्डो आदम पहुँचकर पूज्य सद्गुरु महाराज जी को सारी बात बताई. करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छाओं को पूरी करने वाले अर्न्तयामी, सर्व ऋिद्धि-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने जब यह बात सुनी, तत्क्षण उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं माता पदीबाई के पास । जो इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है. तो हम भी उस माता के दर्शन करेंगे.

देखें! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी भक्त वत्सलता- निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी परम दयालु **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** कह रहे हैं कि हम उस माता के दर्शन करेंगे. इसे कहते हैं **भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !** भक्त की भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा!

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौंसपुर में होते ही सर्वप्रथम माता पदी बाई के घर पहुंचकर दर्शन दिया । सद्गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन पाकर माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अति प्रसन्न मन से कोटि- कोटि वन्दन करती है. उनके नेत्रों से प्रेम विह्ल अश्रुधारा बहने लगती है, जैसे भगवान श्रीराम का दर्शन पाकर माता शबरी के प्रेमाश्रु निकले थे-वैसे ही माता की आंखों से सजल धारा बह रही थी । जब श्री गुरुदेव भगवान ने अपना कृपा भरा वरद् हस्त उनके ऊपर रखा और माता बहुत गदगद् और प्रसन्नचित्त हुई । इस प्रकार माता ने चालीहा अनुष्ठान पूरा किया ।

तत्पश्चात् यहीं पर **''श्री गुरुदेव भगवान''** जी के पावन सानिध्य में हवन-यज्ञ अनुष्ठान, पूजा-पाठ एवं भजन-सत्संग का भव्य आयोजन हुआ. वहां के सभी प्रेमी ऐसा अद्भुत दृश्य देखकर बड़े प्रसन्न हुए । 'इसे कहते हैं- भक्त और गुरु की अनन्त पराकाष्ठा । भक्त व भगवान का प्रेम । बोलो भक्त और भगवान की जय ।

सद्गुरु टेऊँराम का, चालीहा महोत्सव अभिराम ।
श्रद्धा भक्ति से पाठ कर, होवे पूर्ण काम ।।

–प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जी),
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता । वह अपनी अबाध गति से अपने पथ पर निरन्तर चलता ही रहता है । जहाँ तक पढ़ने, सुनने, देखने और मन की गति है, वह सब समय के अधीन है

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

किसने भेजा भोजन-प्रसाद- कौन था लाने वाला- उसकी लीला वो ही जाने

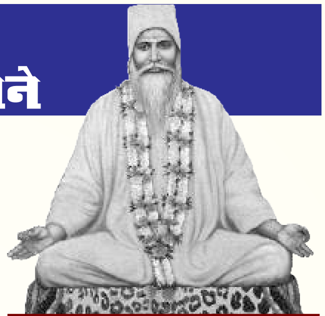

श्री सांई टेऊँराम बाबा की अद्भुत महिमा

अनन्त-असीम शक्तियों के भण्डार होते हैं विरक्त संत-महापुरुष! सदैव परमात्मा की बन्दगी करने वाले ये योगी महापुरुष कभी भी और किसी भी परिस्थिति में घबराते नहीं है. उन्हें भगवान पर पूर्ण विश्वास और भरोसा होता है. साथ ही भक्ति और शक्ति का अलौकिक प्रभाव! तभी सांई टेऊँराम बाबा जी ने भजन में लिखा-

भगवान पर हमेशा, विश्वास धर प्यारा।
निश्चय भला करेगा, प्रभू सदा तुम्हारा।
दिलगीर होय दुख में, भगवान ना भुलाओ,
धीरज धरे हृदय में ले राम का सहारा।

इसी प्रकार तपस्वी संत-महात्मा मन-कर्म-वाणी से सदैव भला करना, सुख देना, पर उपकार करना, सेवा करना, नाम जपना आदि अनेक शुभ कर्म करना ही उनकी जीवनचर्या में शामिल रहता है.

स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई सन्त पछान।।

समदृष्टि रखकर बिना किसी स्वार्थ के सदैव सबको सम्मान देना व सेवा करना ये संतों के प्रमुख लक्षण होते हैं. सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी के जीवन में ये सभी सद्गुण विद्यमान थे. कोई भी अतिथि, संत-महात्मा, गरीब, अनाथ आ जावे तो उसकी सेवा बड़े ही स्नेह भाव से करते थे. उनके जीवन से जुड़े अनेक लीला प्रसंग देखने-सुनने-पढ़ने को मिलते हैं.

एक समय खण्डू गाँव, जहाँ सांई टेऊँराम बाबा का जन्म स्थान है, वहीं संत-महात्माओं की मण्डली आ गई. संतों को भूख- प्यास भी बहुत लगी थी. संयोग भी कुछ ऐसा बना कि उस समय घर पर कुछ भी राशन सामग्री नहीं थी. सभी लोग चिन्ता में पड़ गये. तब माता कृष्णादेवी ने सांई टेऊँराम से कहा- सांई बेटा! घर में तो कुछ भी भोजन-सामग्री नहीं है, न ही आटा, न ही चावल, न ही दाल! इन संत-महात्माओं को भोजन कैसे करायेंगे?

तपस्वी-अवधूती संतों को किस बात की चिन्ता! वे तो पूर्ण सिद्ध होते हैं. उन्हें तो केवल माँ अन्नपूर्णा देवी से कहने की देरी है. वो तो सदैव संत-महापुरुषों की सेवा में तत्पर रहती है. तब सांई टेऊँराम बाबा जी ने माता से कहा- माँ! आप चिन्ता न करें, प्रभु परमात्मा सब भली करेंगे. उनका काम वो ही जाने. आप तो केवल अच्छी तरह संत मण्डली की सेवा करो और आसन दो. दोपहर में सभी संतों को भोजन-प्रसाद अवश्य ही खिलायेंगे.

इतना कहकर सांई तो बैठ गये भजनानन्द की मौज में. मन की तार जोड़ दी उस प्रभु परमात्मा से. किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं. घर परिवार वालों को चिन्ता होने लगी कि संतों को भोजन कैसे करायेंगे? लीला पुरुषोत्तम गुरुदेव सांई टेऊँराम बाबा की लीला को कौन समझे! कब कौन सी लीला रच दें.

माता कृष्णादेवी सोच ही रही थीं कि अचानक तीन-चार भक्त लोग माता जी के पास आये और कहने लगे- माता जी! ये भोजन स्वीकार करें. भोजन-प्रसाद भी कम से कम ४५-५० लोगों का था. पूछने पर कहा- आज भाई ईसरदास सालारे वाले के यहाँ उत्सव है, उन्होंने ही भोजन भेजा है. भोजन आदरपूर्वक स्वीकार कर माता ने सभी संत-महात्माओं को भरपेट भोजन-प्रसाद खिलाया. सभी संत प्रसन्नचित्त होकर अपने स्थान को लौट गये. सायंकाल जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि कि ईसरदास के यहाँ तो कोई भी उत्सव नहीं है. अब कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगियों की रचनात्मक लीलाओं को. हमारी समझ से कोसों दूर!

ईश्वर तुल्य ऐसे योगीश्वर भगवान की लीलाओं का पार पाना असंभव, उनकी लीला वो ही जाने! ऐसे थे ऋद्धि-सिद्धि के मालिक- सर्व समर्थ सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा!

—साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

आहार शुद्धि से व्यवहार शुद्ध होता है और तमोगुणवर्धक नाना प्रकार के माँस-मछलियाँ आदि जो अभक्ष्य पदार्थ हैं, जिनके आहार करने से अन्त: करण मलिन होता है, उन पदार्थों का कभी भी सेवन नहीं करना चाहिए।

समाज सुधारक, मानवता के उपासक कर्मयोगी युगपुरुष आचार्य सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'

सद्गुरु टेऊँराम पुण्य तिथि 20 जून, 2026 पर विशेष

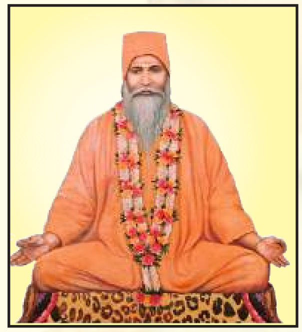

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक
आचार्याधीश ब्रह्मलीन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

भारतवर्ष आदि काल से ही संतों, ऋषियों और महापुरुषों की पुण्यभूमि रहा है। इस पावन धरा पर समय-समय पर ऐसे दिव्य आत्माओं का अवतरण होता रहा है, जिन्होंने अपने तप, त्याग, ज्ञान और प्रेम से मानवता का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय संस्कृति की महान परंपरा में संतों का स्थान सदैव सर्वोच्च रहा है, क्योंकि वे केवल धर्म के उपदेशक ही नहीं, अपितु समाज के सच्चे पथप्रदर्शक और लोकमंगल के प्रेरक होते हैं।

जब भारत का विभाजन हुआ और सिंध प्रदेश का एक भाग पाकिस्तान में चला गया, उसी पुण्यभूमि सिंध में एक ऐसे महान संत का अवतरण हुआ, जिन्होंने प्रेम, सेवा और अध्यात्म का ऐसा दीप प्रज्वलित किया जिसकी ज्योति आज भी असंख्य हृदयों को आलोकित कर रही है। वे थे - परमाचार्य, प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक, ब्रह्मलीन आचार्य श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज।

पूज्य स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज केवल एक संत ही नहीं थे, बल्कि वे एक युगदृष्टा, समाज-सुधारक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और सच्चे सद्गुरु थे। उन्होंने भगवत् प्रेम का ऐसा दिव्य प्रकाश फैलाया जो केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि देश-विदेश में भी असंख्य लोगों के जीवन को आलोकित करता गया। उनके प्रेममय व्यक्तित्व का दर्शन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति भक्ति और आनंद के रस में सराबोर हो जाता था।

संत महापुरुषों की महिमा का वर्णन स्वयं भगवान भी करते हैं। श्रीमद्भागवत में भगवान कहते हैं-

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ।
मदन्यत्ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि ।।

अर्थात् साधु मेरा हृदय है और मैं साधु का हृदय हूँ। मेरा साधु मेरे अतिरिक्त किसी को नहीं जानता और मैं भी अपने साधु के अतिरिक्त किसी को नहीं जानता। यह कथन संतों की परम अवस्था का परिचायक है। सच्चे संत ब्रह्मदृष्टा होते हैं। वे प्रत्येक जीव में परमात्मा का दर्शन करते हैं और अपना सम्पूर्ण जीवन जगत के कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी ऐसे ही करुणा और दया के सागर थे। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानवता की सेवा, समाज के उत्थान और जीवों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए अर्पित कर दिया। उनके उपदेशों का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को नश्वर संसार की मोह-माया से निकालकर अमर आत्मस्वरूप की ओर ले जाना था।

स्वामी जी अपनी वाणी में संसार की क्षणभंगुरता का बोध कराते हुए कहते हैं-

धन दौलत तो दूर है, साथ न चालत देह।
टेऊँ निकसे प्राण के, जलत चिता में एह।।

इस दोहे में महापुरुष मानव को जागृत करते हुए कहते हैं कि जिस धन-दौलत और वैभव पर मनुष्य इतना अभिमान करता है, वह तो दूर की बात है, उसका अपना शरीर भी अंत समय में उसका साथ नहीं देता। प्राण निकल जाने के बाद यही शरीर चिता की अग्नि में भस्म हो जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप, अर्थात् आत्मतत्त्व की पहचान करनी चाहिए। संसार के समस्त भौतिक संबंध अस्थायी हैं। हमारा शाश्वत और वास्तविक संबंध केवल परमात्मा से है।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आगे मानव जीवन की एक अन्य बड़ी समस्या की ओर संकेत करते हुए फरमाते हैं-

आशा, तृष्णा, ईर्ष्या, चौथी चिंता आग।
टेऊँ इस से जलत सब, बाचे को बड़भाग।।

महापुरुष कहते हैं कि आशा, तृष्णा, ईर्ष्या और चिंता ऐसी अग्नियाँ हैं जिनमें सम्पूर्ण संसार जल रहा है। इन मानसिक विकारों से बच पाना अत्यंत दुर्लभ है। केवल वही मनुष्य वास्तव में भाग्यशाली है जिसे सच्चे सद्गुरु की शरण प्राप्त हो

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश | भगवान, गुरु और देश की भक्ति करना सुगम है परन्तु उसे निभाना कठिन है।

जाती है। सद्गुरु ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हैं।

स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपने उपदेशों द्वारा मानव को समझाया कि संसार में स्थायी सुख की प्राप्ति संभव नहीं है। धन, पद, प्रतिष्ठा और भौतिक वस्तुओं की तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती। यदि आशा रखनी है तो भगवान की प्राप्ति की आशा रखो, यदि तृष्णा करनी है तो प्रभु-भक्ति की तृष्णा करो। ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक जीव में वही परमात्मा विद्यमान है। जब सबमें एक ही ईश्वर का वास है, तब द्वेष और भेदभाव का प्रश्न ही नहीं उठता।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित प्रेम प्रकाश मंडल का मूल उद्देश्य भी यही था कि प्रत्येक हृदय में प्रेम का प्रकाश प्रज्वलित हो और मानव समाज जाति, धर्म, भाषा और प्रांत के संकीर्ण भेदों से ऊपर उठकर आत्मीयता एवं भाईचारे का जीवन जी सके। उन्होंने प्रेम को ही धर्म का सार माना और प्रेम को ही ईश्वर प्राप्ति का सहज मार्ग बताया।

उनकी आध्यात्मिक वाणी दोहे, पद, छंद, भजन और कवित्तों के माध्यम से जन-जन तक पहुँची। उनकी वाणी में ईश्वर-प्राप्ति, कर्म-उपासना, वैराग्य, सदाचार, सेवा, भक्ति और आत्मज्ञान का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने जनमानस को सकारात्मक जीवन दृष्टि प्रदान करते हुए धर्म को व्यवहारिक जीवन से जोड़ा।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमूल्य आध्यात्मिक वाणी का विशाल संकलन लगभग ८०० पृष्ठों के महान ग्रंथ 'प्रेम प्रकाश' के रूप में उपलब्ध है। यह ग्रंथ केवल एक धार्मिक पुस्तक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान, भक्ति और जीवन-दर्शन का अनुपम भंडार है। इसमें निहित शिक्षाएँ आज भी साधकों के लिए मार्गदर्शक दीपक का कार्य करती हैं।

आज देश और विदेश में जहाँ-जहाँ प्रेम प्रकाश मंडल की शाखाएँ एवं आश्रम स्थापित हैं, वहाँ सद्गुरु द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के अनुरूप संत सेवा, अतिथि सेवा, गौ सेवा, शिक्षा सेवा, मानव सेवा तथा समाज कल्याण के विविध कार्य निरंतर संचालित हो रहे हैं। इन सेवाकार्यों को देखकर सहज ही अनुभव होता है कि सद्गुरु की शिक्षाएँ आज भी जीवंत हैं और समाज को दिशा प्रदान कर रही हैं।

वास्तव में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन प्रेम, सेवा, त्याग, भक्ति और मानवता का उज्ज्वल उदाहरण है। उन्होंने अपने दिव्य जीवन द्वारा यह सिद्ध किया कि सच्चा संत वही है जो स्वयं प्रकाशमान होकर दूसरों के जीवन को भी आलोकित करे।

ऐसे महान युगपुरुष, परम संत, प्रेमावतार, समाज-सुधारक एवं मानवता के उपासक कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में हमारा कोटि-कोटि प्रणाम, बारम्बार वंदन और श्रद्धापूर्ण नमन।

संत मोहनलाल जी, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

प्रेरक प्रसंग

एक चिकित्सक अमोघ चिकित्सा के लिए प्रख्यात थे। वे स्वयं भी निरोग रहते और असाध्य रोगियों तक को रोग मुक्त करते। दिन भर वे लकड़ी काटने का काम करते और जंगल में रहते थे। एक दिन किसी असाध्य रोग से पीड़ित एक श्रीमान उन्हें खोजते हुए जंगल में पहुँचे। व्यथा सुनकर उन्होंने वहीं एक महीने के लिए सेवन योग्य दवा दी और कहा इसे अपने माथे के पसीने में गीली करके प्रातः सायं खाया करना। पसीना निकालने में उस बड़ी मेहनत करनी पड़ती। इस आधार पर निठल्लापन दूर हुआ साथ ही रोग मुक्त होने का अवसर भी मिला।

वह श्रीमान बहुत दिन बाद चिकित्सक का उपकार जताने और कुछ भेंट देने फिर पहुंचे साथ ही उस औषधि का नाम बताने तथा बनाने का विधान समझाने का आग्रह किया, ताकि जरूरत पड़ने पर उसे स्वयं ही बना लिया करें।

चिकित्सक ने समझाया। औषधि तो सूखी घास भर थी पर उसका अनुपात पसीने से मिलाना था। कड़ी मेहनत ही वह दवा है जिससे सभी रोग दूर हो सकते है। आलसी को ही सब रोग घेरते है।

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी आत्म साक्षात्कार के पश्चात् आप सच्चे आनन्द का अनुभव करेंगे।

प्रेम, सेवा और साधना की अद्भुत परम्परा – श्री अमरापुर स्थान व श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय (पंथ)

भारतीय दर्शन मे संत परम्परा केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रही है। संतों ने समाज को प्रेम, सेवा और सद्भाव का मार्ग दिखाया है। इसी महान परम्परा में श्री अमरापुर स्थान, श्री प्रेम प्रकाश मंडल का नाम अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। यह सम्प्रदाय आध्यात्मिक चेतना, मानव सेवा और सनातन संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

इस दिव्य परम्परा की स्थापना सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने की थी। उनका जन्म ६ जुलाई १८८७ को सिंधु नदी के समीप स्थित खंडू गांव में हुआ था। बचपन से ही उनका मन ईश्वर भक्ति में लगता था। वे अत्यंत सरल, शांत और आध्यात्मिक स्वभाव के थे।

मात्र १४ वर्ष की आयु में उन्होंने अपने गुरुदेव स्वामी आसूराम से दीक्षा ग्रहण कर ली थी। इसके बाद उनका जीवन पूरी तरह अध्यात्म को समर्पित हो गया। उन्होंने युवावस्था में हरिद्वार में संन्यास ग्रहण किया। संन्यास के पश्चात उन्होंने सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार का महान कार्य प्रारम्भ किया।

स्वामी टेऊँराम जी ने सनातन परंपरा में समाज को ऊँ श्री सतनाम साक्षी नाम मंत्र दिया। यह मंत्र आज भी लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का आधार है। उन्होंने मानव मात्र को प्रेम और सद्भाव के साथ जीवन जीने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य को ईश्वर को साक्षी मानकर आत्मचिंतन करना चाहिए।

वे केवल संत ही नहीं थे। वे भारतीय दर्शन के महान साहित्यकार और दार्शनिक भी थे। उनके द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ आध्यात्मिक साहित्य की अमूल्य धरोहर माना जाता है। लगभग ८०० पृष्ठों के इस ग्रंथ में दोहे, पद्म, छंद, कवित और भजनों का अद्भुत संग्रह है। इसमें आध्यात्मिक ज्ञान, भक्ति और जीवन दर्शन का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

उनकी रचनाओं में संत कबीर, मीरा, सूरदास, रसखान, गुरु नानक और दादूदयाल जैसी संत परम्परा की झलक दिखाई देती है। उन्होंने श्री अमर कथा, यमराज नचिकेता, साक्षी दर्शन, कवितावली - छंदावाली और प्रेम प्रकाश दोहावली, सोलह शिक्षाएं, सलोक, माला शान्ति के दोहे जैसे अनेक ग्रंथों की रचना भी की। केवल ५५ वर्ष की आयु में उनका महानिर्वाण हुआ। उनका महानिर्वाण हैदराबाद स्थित अमरापुर दरबार में हुआ। अल्प आयु में ही उन्होंने समाज और अध्यात्म को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

उनके पश्चात महर्षि स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने इस सनातन परम्परा को आगे बढ़ाया। उन्होंने जयपुर में श्री अमरापुर स्थान की स्थापना की। इसके बाद स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज तथा स्वामी हरिदासराम ने इस आध्यात्मिक धारा को निरंतर आगे बढ़ाया। वर्तमान में स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के नेतृत्व में सम्पूर्ण प्रेम प्रकाश मंडल संचालित हो रहा है।

आज जयपुर स्थित श्री अमरापुर स्थान सम्पूर्ण प्रेम प्रकाश मंडल का मुख्यालय है। यहां से देश-विदेश की शाखाओं का संचालन किया जाता है। श्री अमरापुर स्थान केवल मंदिर ही नहीं है। यह स्थान समाज सेवा, साधना और सामाजिक समर्पण का मुख्य केंद्र है। यहां अन्न प्रसाद वितरण, जल मंदिर, गौशाला, विश्रामगृह, मोक्षवाहिनी, निर्धन परिवारों को राशन वितरण और अस्पताल जैसी अनेक सेवाएं संचालित हो रही हैं।

सम्प्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता सेवा भावना है। यहां भजन और सत्संग के साथ समाज सेवा को भी महत्व दिया जाता है। गरीबों को भोजन कराया जाता है। जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित किए जाते हैं। रक्तदान शिविर और स्वास्थ्य शिविर लगाए जातेहैं। गौसेवा के कार्य भी निरंतर जारी हैं।

आज श्री प्रेम प्रकाश मंडल की भारत और विदेशों में लगभग १५० से अधिक शाखाएं हैं। राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तराखंड और तमिलनाडु सहित अमेरिका, स्पेन, दुबई और बैंकाक तक इसकी शाखाएं स्थापित हैं। हर आश्रम में प्रतिदिन भजन, सत्संग, सेवा और सुमिरन का वातावरण बना रहता है। हरिद्वार में अमरापुर घाट, स्वामी सर्वानंद घाट, प्रेम प्रकाश घाट, सतनाम साक्षी घाट और ध्यान कुंज, स्वामी टेऊँराम सेतु, जैसे अनेक आध्यात्मिक स्थलों का संचालन भी इसी परम्परा प्रेम प्रकाश मण्डल, श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा किया जा रहा है। रामेश्वर धाम में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशाल घाटों का निर्माण कराया गया है। यह सम्प्रदाय (पंथ) की सेवा भावना का जीवंत उदाहरण है। आज जब समाज भौतिकता और तनाव की ओर बढ़ रहा है, तब श्री प्रेम प्रकाश मंडल प्रेम, सेवा और आध्यात्मिकता का संदेश दे रहा है। यह परम्परा मानवता को जोड़ने का कार्य कर रही है। यह हमें सिखाती है कि सच्चा धर्म केवल पूजा नहीं है। सच्चा धर्म मानव सेवा, सद्भाव और आत्मकल्याण है। निस्संदेह, स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा प्रज्वलित आध्यात्मिक दीप आज भी लाखों लोगों के जीवन में प्रेम, प्रकाश और शांति का आलोक फैला रहा है।

जितेंद्र दाधीच (वेदाचार्य)

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

समय पाकर सभी जड़-चेतन जितने भी जीव हैं वे प्रकट होते हैं और छिप जाते हैं। यह क्रम न जाने कब से आरम्भ हुआ और कब तक चलेगा, यह कोई नहीं जान सकता।

तपोनिष्ठ सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा के पावन जीवन की झलकियाँ

१. सांई टेऊँराम बाबा की वाणी अभेद होती थी. जिससे सभी जाति, धर्म, वर्ण के लोग बड़े मनोयोग से सांई का सत्संग श्रवण करते थे.

२. सांई टेऊँराम बाबा के अखण्ड भोजन भण्डारे का प्रसाद चारों ही वर्ण के लोग बड़े ही भाव से खाते थे.
'मोक हले पई मर्द जी मानी, चारई वर्ण जिमिया थे जानी, मानो कर्ण कुबेर हो दानी, निर्मोही निष्काम।'

३. सांई टेऊँराम बाबा श्री अमरापुर दरबार, टण्डाआदम सिंध में प्रतिदिन प्रातःकाल योग वशिष्ठ की कथा एवं सायंकाल पारस भाग की कथा करते थे.

४. सांई टेऊँराम बाबा प्रतिदिन ब्रह्मवेला में उठकर ध्यान-चिन्तन में समाधिस्थ हो जाते थे.

५. सांई टेऊँराम बाबा संत-महात्माओं का बड़ा सम्मान करते थे. जो भी संत महात्मा आता था तो स्वयं उनका आदर सम्मान करते, बड़े ही स्नेह भाव से मिलते और ज्ञान चर्चा करते थे, साथ ही उन्हें दरवाजे तक छोड़ने जाते थे.

६. सांई टेऊँराम बाबा सदैव एकांत में बैठकर ध्यान-चिंतन साधना के साथ सत् शास्त्रों का अध्ययन करते थे.

७. सांई टेऊँराम बाबा को स्वर संगीत और राग-रागनियों का निपूण ज्ञान था. एक ही भजन को सोलह सुरों में गाने की दक्षता थी. प्रेम प्रकाश ग्रंथ में जो भी भजन है वे सभी राग-रागनियों में रचे गये हैं.

८. श्री अमरापुर दरबार डिब पर जितने साधु संत महात्मा रहते थे उनकी देखभाल सार-संभाल सद्गुरु सांई टेऊँराम बाबा किया करते थे.

९. सांई टेऊँराम बाबा आश्रम के कार्यों का निरीक्षण कर शेष समय अध्यात्म चिंतन में स्थित रहते थे.

१०.सांई टेऊँराम बाबा दिन में केवल एक ही समय भोजन प्रसाद ग्रहण करते थे.

११.सांई टेऊँराम 'होली उत्सव' प्रायः खण्डू गाँवमें ही मनाते थे.

१२. सांई टेऊँराम 'कार्तिक महोत्सव' स्वामी परमानन्द जी महाराज के प्रेमभाव युक्त स्नेहाग्रह पर परमानन्द भण्डार में ही मनाते थे.

१३. सद्गुरु सांई टेऊँराम बाबा जी का सत्संग-प्रवचन सभी जाति, वर्णाश्रम और सभी धर्म सम्प्रदाय के लोग श्रवण करते थे.

१४. सांई टेऊँराम बाबा की ध्यान मुद्रा सिद्धासन-पद्मासन थी.

१५. सांई टेऊँराम बाबा कण्डी वृक्ष के नीचे भी तप साधना किया करते थे.

१६. सिन्ध टण्डाआदम दरबार पर उस समय इतना कुछ न होते हुए भी सांई टेऊँराम बाबा ने भोजन प्रसाद अनवरत चालू किया.

१७. सांई टेऊँराम बाबा के जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ आयीं किन्तु कभी भी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया. यहाँ तक कि इकतारा खरीदने हेतु स्वयं मेहनत मजदूरी की. अर्थात् स्वावलम्बी जीवन व्यतीत किया.

१८. सांई टेऊँराम बाबा भोजन प्रसाद भण्डारे में पंक्तिबद्ध संतों के साथ ही करते थे.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है,
तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बांध नहीं सकते।

१९. सांई टेऊँराम बाबा के भजन-सत्संग में प्रेम दर्द और वैराग्य भरा होता है.

२०. सांई टेऊँराम बाबा डण्डा-चिप्पी और इकतारा सदैव अपने साथ रखते थे.

२१. सांई टेऊँराम बाबा अमरापुर दरबार में स्थित कुँऐं के बीचों बीच एक गुफा में भी बैठकर तपस्या किया करते थे.

२२. सांई टेऊँराम बाबा माँस-मछली-शराब आदि निषिद्ध पदार्थों एवं जिन्न, भूत-प्रेत, गण्डा-ताबीज आदि का बहुत खण्डन करते थे.

२३. सांई टेऊँराम बाबा के सत्संग में सरलता, सच्वाई, सहज ग्राह्यता थी. उनकी वाणी प्रत्येक के हृदय में अमिट छाप छोड़ती थी.

२४. जिस प्रकार गुरु गोरखनाथ सिद्धों के साथ बगीचों में या जंगलों में रहते थे उसी प्रकार सांई टेऊँराम बाबा भी संत मण्डली सहित अनेकों बार जंगल या बगीचों में रात्रि विश्राम करते थे.

२५. सांई टेऊँराम बाबा ने स्वयं प्रचण्ड सिद्ध शक्ति से पंथ-मंत्र-ग्रंथ और धाम की स्थापना कर नई अलख जगाई.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

अति आवश्यक निर्देश

आतिशबाजी उपयोग न करें

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट द्वारा निर्णय लिया गया है कि वर्तमान समय में प्रायः परम श्रद्धेय गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डल के आगमन पर अगवानी करते समय प्रेमियों द्वारा अपनी सद्भावना एवं प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये आतिशबाजी का उपयोग किया जा रहा है । जिससे न केवल पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है अपितु सम्पूर्ण प्राणी मात्र के लिये कष्टकारी है एवं साथ-साथ पूज्य महाराज श्री एवं पूज्य सन्तों के साथ सम्मिलित होने वाले प्रेमियों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत/प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है , जिससे हम अनायास ही पाप के भागी बनते हैं ।

अतः प्रेम प्रकाश आश्रमों के माननीय प्रबन्धकों एवं प्रेमियों से विनम्र विनती है कि अपने-अपने शहर एवं प्रेमियों के व्यक्तिगत निवास स्थल पर आज से ही पूज्य सन्त मण्डल के आगमन पर स्वागत-सम्मान में किसी भी प्रकार की आतिशबाजी का उपयोग ना करें और ना ही किसी को करने दें ।कृपया उक्त निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करने की कृपा करें ।

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट
अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश आप भक्ति, शुभ कर्म का बीज बोते जाओ कोई न कोई दाना अवश्य उगेगा।

।। ॐ सतनाम् साक्षीणे नमः।।　　।। ॐ सद्‌गुरु टेऊँरामाय नमः।।

श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अष्टोत्तरशतनामावली (108 नाम)

ॐ निःशोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँरामं शरणं प्रपद्ये॥
ॐ टे त्रिगुण स्वरूपाय, ऊँ निर्गुण निरूपणे।
टेऊँ ब्रह्माभिधानाय, नमस्तस्मै नमो नमः॥

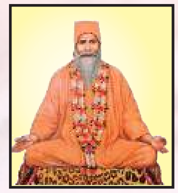

प्रत्येक नाम के अंत में ''नमः'' बोलें ।

1 - ॐ श्री टेऊँरामाय नमः।	2 - ॐ सद्‌गुरवे नमः।	3 - ॐ सतनामसाक्षीप्रचारकाय नमः।
4 - ॐ श्री चेलानंदनाय नमः।	5 - ॐ श्री कृष्णासुताय नमः।	6 - ॐ गुरुनिष्ठाय नमः।
7 - ॐ शिवरूपाय नमः।	8 - ॐ लक्ष्मी नारायण साक्षात् काराय नमः।	9 - ॐ वरुण देव साक्षात् काराय नमः।
10 - ॐ धर्मसंस्थापकाय नमः।	11 - ॐ भक्तवत्सलाय नमः।	12 - ॐ करुणासागराय नमः।
13 - ॐ दयामूर्तये नमः।	14 - ॐ ज्ञानप्रदाय नमः।	15 - ॐ प्रेमस्वरूपाय नमः।
16 - ॐ सत्यव्रताय नमः।	17 - ॐ सत्यधर्मपालकाय नमः।	18 - ॐ लोकहितकारिणे नमः।
19 - ॐ जनकल्याणकारिणे नमः।	20 - ॐ शान्तमूर्तये नमः।	21 - ॐ तपोनिधये नमः।
22 - ॐ भक्तिप्रदाय नमः।	23 - ॐ ज्ञानदीपाय नमः।	24 - ॐ अज्ञानतिमिरनाशकाय नमः।
25 - ॐ सत्संगप्रियाय नमः।	26 - ॐ भजनानन्दाय नमः।	27 - ॐ नाममहिमा प्रचारकाय नमः।
28 - ॐ हरिभक्तिप्रवर्धकाय नमः।	29 - ॐ गुरुभक्तिप्रदाय नमः।	30 - ॐ सेवाधर्मप्रतिष्ठापकाय नमः।
31 - ॐ भक्तिप्रियाय नमः।	32 - ॐ संतश्रेष्ठाय नमः।	33 - ॐ ब्रह्मनिष्ठाय नमः।
34 - ॐ आत्मज्ञाय नमः।	35 - ॐ योगेश्वराय नमः।	36 - ॐ योगमार्गदर्शकाय नमः।
37 - ॐ ध्याननिष्ठाय नमः।	38 - ॐ समाधिस्थाय नमः।	39 - ॐ वेदान्तसारवेदिने नमः।
40 - ॐ चित्तशुद्धिप्रदाय नमः।	41 - ॐ विवेकप्रदाय नमः।	42 - ॐ सद्‌बुद्धिदाय नमः।
43 - ॐ मनोनियन्त्रे नमः।	44 - ॐ इन्द्रियजयिने नमः।	45 - ॐ क्षमामूर्तये नमः।
46 - ॐ विनयशीलाय नमः।	47 - ॐ सरलस्वभावाय नमः।	48 - ॐ मधुरभाषिणे नमः।
49 - ॐ लोकशिक्षकाय नमः।	50 - ॐ धर्मोपदेशकाय नमः।	51 - ॐ संस्कारप्रदाय नमः।
52 - ॐ चरित्रनिर्मात्रे नमः।	53 - ॐ राष्ट्रहितचिन्तकाय नमः।	54 - ॐ मानवसेवारताय नमः।
55 - ॐ दीनबन्धवे नमः।	56 - ॐ दुःखभञ्जनाय नमः।	57 - ॐ कृपानिधये नमः।

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी इस कलयुग के समय में संतो के संग द्वारा ही संसार के भवसागर को पार कर सकते हैं।

58 - ॐ मंगलमूर्तये नमः।	59 - ॐ शुभप्रदाय नमः।	60 - ॐ पुण्यात्मने नमः।
61 - ॐ पावनचरित्राय नमः।	62 - ॐ निर्मलहृदयाय नमः।	63 - ॐ निष्कामकर्मयोगिने नमः।
64 - ॐ कर्मयोगप्रवर्तकाय नमः।	65 - ॐ गीतातत्त्वप्रचारकाय नमः।	66 - ॐ वैराग्यनिधये नमः।
67 - ॐ सनातनधर्मरक्षकाय नमः।	68 - ॐ धर्मध्वजवाहकाय नमः।	69 - ॐ भक्तहृदयवासिने नमः।
70 - ॐ आनन्दस्वरूपाय नमः।	71 - ॐ चैतन्यमूर्तये नमः।	72 - ॐ तेजोमयाय नमः।
73 - ॐ दिव्यदृष्टये नमः।	74 - ॐ लोकतारणाय नमः।	75 - ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
76 - ॐ अभयप्रदाय नमः।	77 - ॐ मोक्षमार्गप्रदर्शकाय नमः।	78 - ॐ भवबन्धविमोचकाय नमः।
79 - ॐ परमहितैषिणे नमः।	80 - ॐ धर्मदीपाय नमः।	81 - ॐ सत्पथप्रदर्शकाय नमः।
82 - ॐ श्रद्धावर्धकाय नमः।	83 - ॐ विश्वासप्रदाय नमः।	84 - ॐ सद्भक्त संरक्षकाय नमः।
85 - ॐ नामरसिकाय नमः।	86 - ॐ हरिकीर्तनप्रियाय नमः।	87 - ॐ सत्संगस्थापकाय नमः।
88 - ॐ अमरापुरप्रेरकाय नमः।	89 - ॐ सिंधुसंतशिरोमणे नमः।	90 - ॐ भारतभूमिभूषणाय नमः।
91 - ॐ जगद्गुरवे नमः।	92 - ॐ विश्वबन्धवे नमः।	93 - ॐ सदानन्दाय नमः।
94 - ॐ सदाशिवभावाय नमः।	95 - ॐ गुरुकृपावताराय नमः।	96 - ॐ भक्ताभीष्टप्रदाय नमः।
97 - ॐ कल्याणस्वरूपाय नमः।	98 - ॐ परमदयालवे नमः।	99 - ॐ सत्यमार्गप्रकाशकाय नमः।
100 - ॐ सदाचारप्रवर्तकाय नमः।	101 - ॐ हरिनामरसदाय नमः।	102 - ॐ विश्वशान्तिप्रदाय नमः।
103 - ॐ सतनामसाक्षिणे नमः।	104 - ॐ परब्रह्मभक्ताय नमः।	105 - ॐ श्रीगुरुचरणरताय नमः।
106 - ॐ सनातनरक्षकाय नमः।	107 - ॐ त्यागमूर्तये नमः।	108 - ॐ परमेष्ठिगुरुवे नमः

ॐ चेलानंदनाय विद्महे
धर्मप्रचारकाय धीमहि
तन्नो श्री टेऊँरामाय प्रचोदयात
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमो नमः।
समर्पण प्रार्थना हे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!
हम सब आपके चरणों में श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और सेवा का पुष्प अर्पित करते हैं।
हमारे जीवन में सत्य, प्रेम, सेवा और सतनाम का प्रकाश सदैव बना रहे।

प्रकाशक :- श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

कल्याण जून 2022 अंक

सच्चा सौदा नाम का

नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार ।
कह टेऊँ शुद्ध भाव से, सबका कर सत्कार ।।

सृष्टि के पालनहार परमात्मा सबको चला रहे हैं । क्या तेरा, क्या मेरा, कुछ नहीं । सर्वत्र परमात्मा ही परमात्मा....अपनत्व भाव....।

ऐसे ही परमात्मस्वरूप उदारता की साक्षात् मूर्ति **युगपुरूष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज,** जिनकी बाल्यावस्था से ही वृत्ति परमात्मा से जुड़ी हुई थी, किंतु लौकिक मान-मर्यादायों को ध्यान में रखकर परिवार में बड़ो की आज्ञा में रहना उनका परम ध्येय था । पिता श्री चेलाराम के देवलोकगमन के पश्चात् उनके बड़े भ्राता श्री टहलराम जी पूरी जिम्मेदारी से कार्यभार संभालते थे । कार्यों में हाथ बंटाने के उद्देश्य से स्वामी जी को भी दुकान का कार्य भार संभालने के लिये कहा गया ।

जो संसार में जीवों का उद्धार करने के लिये आया हो, उसे भला सांसारिक व्यवहार से क्या काम ! फिर भी माताश्री तथा बड़े भ्राता के आज्ञानुसार प्रतिदिन लोक व्यवहार की तरह दुकान खोलते थे । जिसका मन परमात्मा से जुड़ा हो, वह सदैव परमात्मा के नाम का ही सौदा करता है, उसे व्यवहारिक सौदे से क्या काम ! अपनी दुकान पर लिखवा दिया-

सच्चा सौदा नाम का, झूठा सब व्यवहार ।
नाम जपे चलता रहे, जग का कारोबार ।।

परमात्मा को ही सबकुछ मान लिया । दिन भर राम-नाम रूपी सौदागरों की कतारें लगी रहतीं, सत्संग-भजन-कीर्तन की बहार, सन्त महात्माओं की सत्संग सभा, आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा, सभी भक्त ज्ञान-सरोवर में लगाते डुबकियाँ...बस ! सौदा नाम का...

जो कोई भी दुकान पर आता, अपनी आवश्यकतानुसार वस्तु ले जाता, कोई हिसाब-किताब नहीं । जिसे चाहिये पैसा रख जाय तो ठीक, न रखे तो भी ठीक । सब कुछ भगवान-भरोसे । सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज तो अपनी भक्ति में मस्त, परमात्मा के रंग में रंगे... गरीब-अनाथों को तो मुफ्त में ही सामान दे देते...।

ऐसा अलौकिक व्यवहार ! जब उनके बड़े भाई को पता चला कि स्वामी जी दुकान का सामान गरीब-अनाथों को लुटा रहे हैं । सारे दिन सन्तों को बैठाकर भजन-कीर्तन कर रहे हैं तो बहुत नाराज हुए । कुछ भला-बुरा भी कहा, पर स्वामी जी की अपनी मौज, भक्ति का अनोखा आलम....

स्वामी जी मौन रहे, कुछ भी न बोले । कुछ समय बाद भाई टहलराम ने जब दुकान का कार्यभार संभालकर हिसाब-किताब लगाकर देखा तो आश्चर्य में पड़ गये । जहाँ नुकसान होना चाहिये, वहाँ लाभ-ही-लाभ.... अचम्भित....।

ये होती है भजन-सत्संग में शक्ति । जो सर्वत्र भगवान् को समर्पित हो जाते है । उनका सारा कार्यभार परमात्मा स्वयं पूरा करते हैं । सदैव प्रभु भक्त का मान रखते हैं ।

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश — राम-नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं ।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुण-महिमा के पावन प्रसंग

महापुरुषों के आज्ञा की अवहेलना न करें

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का आत्मानंद से बहुत स्नेह था. वे श्री अमरापुर दरबार (सिंध) में प्रातः कथा पढ़ते थे. इनके कथा पढ़ने का ढंग अत्यंत सरल व मधुर था. आत्मानंद जी कथा पढ़ते थे और महाराज जी उसका अर्थ समझाते थे.

एक दिन की बात है गर्मियों के दिन थे रात्रि का समय था, वहाँ एक राणो भगत करके रहते थे. महाराज जी ने आत्मानन्द को किसी कार्यवश राणे भगत के पास जाने की आज्ञा दी. आत्मानन्द आज्ञा पाकर जाने के लिए तैयार हुआ. जाते वक्त उसने हाथ में एक मोटी लठ (लठिया) उठाई. महाराज जी ने जब उसके हाथ में लकड़ी देखी तो पूछा- क्यों भाई, इतनी बड़ी मोटी लकड़ी क्यों उठाई है?

आत्मानन्द ने कहा- महाराज जी, जाते समय विचार आया कि रास्ते में साँप, बिच्छू आदि जीव जन्तु घूमते रहते हैं, कहीं वे काट न लें. इसीलिए सुरक्षा के लिए ये लठ उठायी है. महाराज जी ने कहा- नहीं बाबा, हम यहाँ बैठने से पहले ही इन साँप आदि से बात करके बैठे हैं कि आप हमें नहीं सताएँगे और हम भी आपको नहीं सताएँगे. अतएव तुम लकड़ी मत ले जाओ. आत्मानन्द ने उस समय तो तुरंत लकड़ी को वहीं रख दिया. फिर जब वह नीचे गया तो मन में पुनः भ्रम जागा, डर भी लगा. वापस आकर उसने फिर से लकड़ी उठा ली.

अब वह लठ हाथ में लेकर जाने लगा तो रास्ते में साँप ने उसे डँस लिया. और वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा. संतों ने आत्मानन्द से कहा- अरे भाई, आपको महाराज जी ने लकड़ी उठाने से मना किया था फिर लकड़ी क्यों उठाई?

जब महाराज जी और जीव जन्तुओं का आपस में समझौता किया हुआ था कि आप हमें कुछ नहीं करेंगे और हम भी आपको कुछ नहीं करेंगे तो फिर? जब इसके जवाबदार महाराज श्री बैठे हुए हैं तो आपको इसकी क्या चिंता? तुमने आज्ञा की अवहेलना की. जब सारे संत उसे (आत्मानन्द को) उठाकर महाराज जी के पास ले आए तब करुणावत्सल महाराज श्री ने अपनी कृपा की और कहा- भाई, इन्हें प्याज खिलाओ और देशी घी पिलाओ. महाराज जी की आज्ञा अनुसार ऐसा ही किया गया. महापुरुषों द्वारा बताया गया अमृत प्रसाद व भगवत् कृपा से थोड़ी ही देर में आत्मानन्द के ऊपर जो सर्प दंश का प्रभाव था वह धीरे-धीरे प्रभावहीन होने लगा और उसे होश आने लगा.

सीख : बड़ों की आज्ञा में अपनी नहीं चलानी चाहिए.

कृपा निधान

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे. मार्ग में एक सूरदास बालक जो मीठे स्वर में भजन गाकर भीख माँग रहा था. करुणा वत्सल गुरुदेव भगवान की दृष्टि उस बालक पर गई.

स्वामी जी ने बालक के पास जाकर उसके सिर पर वात्सल्य भाव से हाथ फेरा और बड़े दुलार-प्यार से पूछा- बेटा! यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो? बालक ने कहा- बाबाजी! रोटी खाने के लिए, अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा, तो घर वाले मुझे भोजन नहीं देंगे.

सद्गुरु महाराज जी को उस पर दया आ गई. महापुरुष तो कृपा निधान दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख देखा नहीं जाता, तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये हल्का कार्य (भीख माँगना) कर रहा है. चलो हमारे साथ आश्रम पर, सेवा करो और भजन करो व भरपूर भोजन- प्रसाद पाओ. उसे आश्रम पर ले आये.

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत-सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- कौन इसका ध्यान रखेगा, कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणानिधान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- सभी में प्रभु परमात्मा निवास करते हैं. हम सब उसी की संतान हैं. इस बालक की सेवा 'मैं' स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा. देखो, दिव्य महापुरुषों की करुणा! कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारंगत गायक बन गया और जीवन भर श्री गुरु दरबार की खूब सेवा करता रहा व नित्य नये-नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सुनाता. ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

संत वचन में शक्ति

सिन्ध प्रदेशके टण्डेआदम शहर में रेत के टीले के

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश सब दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति चाहो तो अपनी दावा छोड़ो।

ऊपर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की बनाई 'श्री अमरापुर दरबार (डिब्)'. बात उस वक्त की है जब खाने-पीने का वहाँ अभाव हुआ करता था. आश्रम पर निर्माण कार्य प्रारम्भिक अवस्था में था. लोगों को वहाँ पहुँचना दुष्कर सा प्रतीत होता था. उसी काल में एक बार खाने के लिए आश्रम पर कुछ भी नहीं था. भूखसे सभी संत-सेवाधारी व्याकुल हो रहे थे. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन थे. सभी संत सेवाधारी स्वामी जी के पास आए और कहा- हे प्रभु! आज आश्रम पर भोजन बनाने के लिए सीधा (सामग्री) नहीं है और सभी को भूख भी बहुत सता रही है. महापुरुषों की अपनी मौज होती है. स्वामी जी ने कहा- एक देग (तपेले) में जल व आश्रम की रेत डालकर अग्नि पर रख दो और ढक्कन ढक दो. समय पर 'सत्नाम साक्षी....' बोलकर भोजन पंगत शुरू कर देना. कौन समझे संत- महापुरुषों की अद्भुत लीलाओं को. संत वचन में होती है शक्ति. देखते-देखते ही समय पर उस रेत-पानी से नमकीन चावलों की देग (तपेला) तैयार हो गया. यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ. सभी ने भरपेट भोजन-प्रसाद पाया. संत महापुरुषों की ऐसी अक्षुण्ण शक्ति को समझ पाना बड़ा कठिन है.

अतिथि देवो भवः

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ-साथ सेवा का भी विशेष गुण था. किसी भी सेवा कार्य को करने में वे कभी संकोच, हिचकते या शर्माते नहीं थे. पद-प्रतिष्ठित होने पर भी उनमें सेवा का वही भाव उनके जीवन काल में देखा गया.

एक बार दोपहर को कुछ अतिथि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सत्संग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार पर आये. वे लोग सद्गुरु महाराज जी से परिचित नहीं थे, उनका यश-कीर्ति सुनकर ही दर्शनों के लिए खिंचे चले आये थे. उस समय सभी संत-सेवाधारी विश्राम कर रहे थे, केवल सद्गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे. वे लोग स्वामी जी से मिले और पूछा- स्वामी टेऊँराम जी कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए आये हैं.

स्वामी जी ने कहा- पहले आप भोजन प्रसाद ग्रहण करो, विश्राम कर लो. शाम को दर्शन कर लेना. उस समय स्वामी जी ने अपने हाथों से साफ-सफाई कर भोजन खिलाया, जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया. दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना बड़ा कठिन.परन्तु स्वामी जी में कथनी और करनी एक समान थी.

सायंकाल वे अतिथि जब स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे तो देखकर हैरान रह गये. अरे! इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी. भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया. ऐसे निर्मानी संत-सत्पुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य-धन्य हो गये.

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर वृक्ष के छाँव तले भजनानन्द की मस्ती में बैठे थे. अवधूती मस्ती का अनोखा आलम! मुख मण्डल पर दिव्य आभा, भक्ति-तपस्या का तेजपुंज! कौन समझे उन संत-फकीर-साईं मुर्शिदों की रमझ को.

उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त. उस भक्त के पास थी संगीत की अद्भुत कला, गाने- बजाने में था निपुण. उसने साईं के सामने बहुत ही मधुर स्वर में भजन गाए.

भक्ति-भाव के भजन सुन साईं टेऊँराम बाबा बहुत प्रसन्न हुए. उस समय श्री साईं टेऊँराम बाबा ने हृदय से प्रसन्न होकर केवलराम से कहा- हे भगत जी! आज हम तुम्हारे भजन भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं. माँग लो, आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा. परन्तु कहते हैं न कि जिसके भाग्य में न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो, फिर भला उसे कुछ कह सकते हैं. उन भोले-भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महापुरुषों की स्थिति कितनी अद्भुत होती है. उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है. परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते. फिर समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता.

बस! फिर क्या था उस समय उस भोले-भाले सूरश्याम भक्त केवलराम को साईं टेऊँराम बाबा जी से माँगना नहीं आया. और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँगा. अगर थोड़ा सोच समझ या विचार करके सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नेत्र-ज्योति (आँखों की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे आज अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता. उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरुदेव के दर्शन भी करता. पर उस समय कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता. महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अद्भुत होती है.

कुछ समय बाद वैराग्यमयी नज़रों से निहारकर साईं टेऊँराम बाबा जी ने कहा- अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! तुम्हें माँगना भी नहीं आया. आज अगर तुम नेत्र (आँखों की ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें प्राप्त हो जाती. पर तुम्हें आज माँगने भी नहीं आया. किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई. अर्थात् बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

परमात्मा सर्व शक्तिमान हैं। उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए उनकी शरण लें तो आपके दु:ख दर्द दूर हो जायेंगे।

इसी प्रकार सांई टेऊँराम बाबा का 140वां प्रकटोत्सव जयपुर, अजमेर सहित देश-विदेश के सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर बड़े ही धूमधाम से मनाया जायेगा

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

माता-पिता से मांगने वालों को भिखारी नहीं कहते,
पर दूसरों से मांगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

साईं टेऊँराम प्रकटोत्सव जयन्ती महोत्सव

19 जुलाई रविवार

जन्मोत्सव 15 जुलाई से 19 जुलाई 2026 घर घर जलाएं दीपमाला

चहुँदिशि छाई प्रकृति की, अद्‌भुत छटा ललाम। हुए अवतरित भूमि पर, सद्गुरु टेऊँराम।।

भगवद् स्वरूप, प्रभु परमात्मा के अंशावतार प्रेम प्रकाशियों के आराध्य, मंगलमूर्ति परमहंस तपोनिष्ठ, ब्रह्म स्वरूप, श्री सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा का 140वाँ अवतरणोत्सव, बुधवार 15 जुलाई से रविवार 19 जुलाई 2026 को देश- दुनिया के प्रेमप्रकाशी भक्तजन-सत्संगी-श्रद्धालु घर-घर दीप जलाकर 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' का दिव्य जन्मोत्सव प्रकाशोत्सव के रूप में श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाएँ- अपनी आस्था से श्रद्धा सुमन समर्पित करें.

ऐसे मनाएँ साईं टेऊँराम मंगलोत्सव

अवतंरण दिवस पर पवित्र कामना से पँचदिवसीय साईं टेऊँराम अखण्ड जोत भी अपने घर, प्रतिष्ठान, मंदिर, आश्रमों में जगायी जा सकती है. मंदिर-आश्रम, घर-आँगन के प्रवेश द्वारों पर आकर्षक रंगोली द्वारा स्वास्तिक 卐 एवं ॐ आकार का शृंगार, अशोकपत्र व पुष्पों का तोरण (बाँधनी), दीपमाला आदि रंगारंग विद्युतीय सजावट करके साईं टेऊँराम भगवान के अवतंरण महापर्व को श्रद्धा भक्तिपूर्वक मनाएँ.....

ऐसे करें साईं टेऊँराम आराधना

सायंकाल को 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' की प्रतिमा विराजमान कर पुष्पों की सुन्दर सजावट करके धूप-दीप, अगरबती, इत्र की सुन्दर महक के बीच सामूहिक रूप से मंगलगीत, बधाईगान, साईं टेऊँराम चालीसा पाठ, ब्रह्मदर्शनी, गुरु प्रार्थनाष्टक का पाठ करना चाहिये. साईं टेऊँराम संकीर्तन, सत्नाम साक्षी महामंत्र जाप, साईं टेऊँराम भजन संध्या, साईं टेऊँराम जन्म साखी का पाठ करके साईं टेऊँराम बाबा की महाआरती सामूहिक रूप से करना चाहिए. साईं टेऊँराम चालीहा व्रतोत्सव पर यदि आपने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ रखा हो तो उसका भोग पारायण आप अपने निकटतम प्रेम प्रकाश आश्रम पर जाकर सामूहिक रूप से करें, यदि आश्रम नहीं है तो घर पर ही उसका विधिवत् भोग पारायण करें.

महाप्रसाद

- फल-मिठाई इत्यादि छत्तीसों प्रकार के व्यंजनों के भोग बाबा को अर्पित करके उसे साईं टेऊँराम बाबा के महाप्रसाद 'ढोढा चटनी' के साथ संगत में वितरित करना चाहिये.
- मंगलमूर्ति 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' के दिव्य अवतरण दिवस को दीपोत्सव - आनन्दोत्सव के रूप में पूरे संसार भर के भक्तजन श्रद्धाभाव से मनाकर साईं का आशीर्वाद प्राप्त करें.
- सभी भक्तजनों को अवतंरण दिवस की अनन्त-अनन्त बधाईयाँ व बाबा की महती कृपा सदैव हम सब पर बरसती रहे, ऐसी पवित्र शुभ कामनाएँ ! सभी की शुभ मनोकामनाएँ साईं टेऊँराम भगवान पूरी करें !

लें शुभ संकल्प

रविवार, 19 जुलाई 2026 **'साईं टेऊँराम बाबा की जयंती'** के पावन अवसर पर हम सभी भक्तजन लें एक शुभ संकल्प-

आज से हम माँस, मछली, अण्डा, शराब, जुआ, पान मसाला, गुटखा, बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू आदि पदार्थों का सेवन कभी नहीं करेंगे तथा जीवन में क्रोध -गुस्सा नहीं करेंगे, सदा सत्य मार्ग पर अपना जीवन चलाएँगे. ऐसा शुभ संकल्प सभी जरूर लें!

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

राम-नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

संत शिरोमणि सतगुरु साईं टेऊँराम साहिब जी महाराज

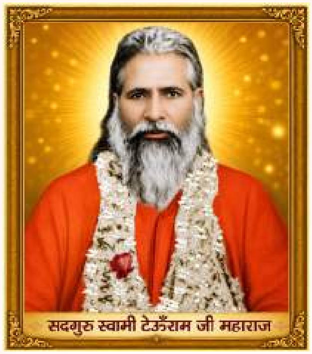
सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

प्रेम, प्रकाश और मानवता के अमर सूर्य

"जब-जब मानवता अंधकार में भटकती है, तब-तब ईश्वर किसी संत के रूप में प्रकाश की एक नई किरण पृथ्वी पर भेजता है।"

सिंध की पावन धरती, जहाँ सिंधु नदी की कल-कल ध्वनि युगों से ऋषियों, संतों और महापुरुषों की तपस्या का गुणगान करती आई है, उसी पुण्य भूमि ने एक ऐसे दिव्य संत को जन्म दिया जिसने प्रेम को धर्म, सेवा को साधना और मानवता को ईश्वर का स्वरूप घोषित किया। वह दिव्य विभूति थे-संत शिरोमणि सतगुरु साईं टेऊँराम साहिब जी महाराज।

उनका जीवन किसी साधारण मनुष्य की जीवनगाथा नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक महाकाव्य कथा है जिसमें त्याग है, तप है, करुणा है, सेवा है और समस्त मानव जाति के लिए असीम प्रेम है।

सिंध की धरती पर एक दिव्य प्रभात

सन् १८८७ की वह पावन बेला केवल एक बालक का जन्म नहीं थी, बल्कि एक ऐसे युगपुरुष का अवतरण था जो आने वाले समय में लाखों लोगों के जीवन में आशा और प्रकाश का दीप जलाने वाला था।

बालक टेऊँराम के मुखमंडल पर असाधारण तेज था। उनकी आँखों में करुणा की गहराई और हृदय में परमात्मा के प्रति सहज आकर्षण था। ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रकृति स्वयं उनके आगमन का स्वागत कर रही हो। सिंधु नदी की लहरें जैसे कोई मधुर भजन गा रही थीं, आकाश का प्रत्येक तारा जैसे भविष्य की घोषणा कर रहा था कि यह बालक केवल अपने परिवार का नहीं, सम्पूर्ण मानवता का होगा।

बचपन से ही संतत्व की झलक

बालक टेऊँराम को खेलों से अधिक आनंद संतों की संगति में आता था।जहाँ अन्य बालक खिलौनों के लिए उत्सुक रहते, वहाँ वे किसी साधु की कथा सुनने के लिए घंटों बैठे रहते। यदि कोई भूखा दिखाई देता तो वे अपना भोजन उसे दे देते। यदि कोई दुखी दिखाई देता तो उसके पास बैठकर उसे सांत्वना देते। उनका हृदय करुणा का अथाह सागर था।

मानो ईश्वर ने उन्हें दूसरों के दुःख को अपना दुःख अनुभव करने की अद्‌भुत शक्ति प्रदान की थी।

गुरु की खोज और आत्मिक जागरण

हर महान आत्मा की यात्रा में गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है। जब टेऊँराम जी का साक्षात्कार अपने गुरु से हुआ, तब उनके जीवन को नई दिशा मिली। गुरु कृपा ने उनके भीतर छिपी आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर दिया। अब उनका जीवन केवल व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने अनुभव किया कि सच्ची साधना स्वयं के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए होती है।

प्रेम का धर्म

संत टेऊँराम साहिब जी का सबसे बड़ा संदेश था-प्रेम।
उनके लिए प्रेम कोई भावनात्मक शब्द नहीं था। प्रेम ही परमात्मा था। प्रेम ही साधना था।
प्रेम ही मुक्ति का मार्ग था। वे कहा करते थे-

"जिस हृदय में प्रेम नहीं, वहाँ प्रभु का निवास नहीं"

उन्होंने कभी किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय के आधार पर भेदभाव नहीं किया। उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण मानवता एक परिवार थी।

सेवा की गंगा

संत टेऊँराम साहिब जी का जीवन सेवा का जीवंत उदाहरण था। उनके आश्रम में आने वाला कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटता था। किसी को भोजन मिलता, किसी को वस्त्र,

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश सब दु:खों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति चाहो तो अपनी दावा छोड़ो।

किसी को सांत्वना, और किसी को जीवन जीने की नई प्रेरणा। वे कहा करते थे-

''भूखे को भोजन कराना सबसे बड़ा यज्ञ है''

इसी भावना से आगे चलकर प्रेम प्रकाश परंपरा में ''भजन और भोजन'' की दिव्य परंपरा विकसित हुई।

सतनाम साखी का दिव्य प्रकाश

संत टेऊँराम साहिब जी द्वारा दिया गया ''सतनाम साखी'' केवल अभिवादन नहीं, बल्कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक दर्शन है। यह मनुष्य को स्मरण कराता है कि वह केवल शरीर नहीं, वह उस परम सत्य का अंश है।

जब कोई श्रद्धालु ''सतनाम साखी'' कहता है, तो वह वास्तव में सत्य, प्रेम और परमात्मा को प्रणाम करता है।

समाज सुधारक संत

संत टेऊँराम साहिब जी ने केवल आध्यात्मिक उपदेश नहीं दिए। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने जातिवाद का विरोध किया। उन्होंने अंधविश्वासों को चुनौती दी। उन्होंने स्त्रियों के सम्मान और मानव समानता का समर्थन किया। उन्होंने कहा-

''मनुष्य की पहचान उसकी जाति से नहीं, उसके चरित्र से होती है।''

प्रेम प्रकाश की ज्योति

जब संत टेऊँराम साहिब जी ने प्रेम प्रकाश का दीप प्रज्वलित किया, तब शायद उन्हें भी ज्ञात नहीं था कि यह दीप आगे चलकर विश्वभर में प्रकाश फैलाएगा। आज भी उनके द्वारा स्थापित परंपरा लाखों श्रद्धालुओं के जीवन को दिशा प्रदान कर रही है। उनकी वाणी, उनकी शिक्षाएँ, उनका आदर्श जीवन, आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

संत नहीं, एक युग

कुछ लोग इतिहास बनाते हैं। कुछ लोग समाज बदलते हैं। परन्तु कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो युगों को दिशा देते हैं। संत टेऊँराम साहिब जी ऐसे ही महापुरुष थे। वे केवल एक संत नहीं थे। वे प्रेम की संस्कृति थे। वे सेवा का आंदोलन थे। वे मानवता की पुकार थे। वे करुणा की मूर्ति थे। वे सत्य के साधक थे। वे ईश्वर के संदेशवाहक थे।

श्रद्धा-सुमन

हे पूज्य गुरुदेव संत शिरोमणि सतगुरु साईं टेऊँराम साहिब जी महाराज आपकी वाणी आज भी हमारे जीवन को प्रकाशित करती है।

आपकी करुणा आज भी हमारे हृदयों को स्पर्श करती है।

आपकी शिक्षाएँ आज भी मानवता को सही मार्ग दिखाती हैं।

जब तक प्रेम जीवित रहेगा, जब तक सेवा का एक दीप जलता रहेगा, जब तक कोई भूखे को भोजन और निराश को आशा देता रहेगा,

तब तक आपका नाम अमर रहेगा। आप सिंध की धरती के गौरव हैं। आप प्रेम प्रकाश परंपरा की आधारशिला हैं।

आप मानवता के अमर सूर्य हैं।

श्री गुरु वंदना

वंदे गुरु चरणारविन्दम् ।

वंदे प्रेममयम्।

वंदे करुणासागरम्।

वंदे मानवता के महामंगलमय प्रकाश स्तंभ को।

वंदे उस दिव्य चेतना को, जिसने सिंध की पावन भूमि पर अवतरित होकर असंख्य आत्माओं के जीवन को प्रकाशमय बनाया।

हे संत शिरोमणि सतगुरु साईं टेऊँराम साहिब जी महाराज!

आपको प्रणाम करना केवल एक संत को प्रणाम करना नहीं, बल्कि प्रेम को प्रणाम करना है।

आपको नमन करना केवल एक महापुरुष को नमन करना नहीं, बल्कि मानवता के सर्वोच्च आदर्श को नमन करना है।

आपको स्मरण करना केवल इतिहास का स्मरण नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर सोई हुई दिव्यता को जागृत करना है।

हे गुरुदेव! जब संसार मोह-माया के अंधकार में भटक रहा था, तब आप सूर्य बनकर उदित हुए।

जब मनुष्य जाति, धर्म, भाषा और सम्प्रदाय के बंधनों में उलझ रही थी, तब आपने प्रेम का अमृत बरसाया।

जब लोग मंदिरों और तीर्थों में परमात्मा को खोज रहे थे, तब

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

परमात्मा सर्व शक्तिमान हैं। उनके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए उनकी शरण लें तो आपके दु:ख दर्द दूर हो जायेंगे।

आपने सिखाया कि
"भूखे के चेहरे में भगवान है, दुखी के आँसुओं में प्रभु का निवास है, और सेवा में ही सच्ची साधना है।"
हे प्रेमावतार! आपके जीवन की प्रत्येक श्वास मानवता के कल्याण के लिए समर्पित थी।
आपके चरण जहाँ पड़े, वहाँ करुणा के पुष्प खिले।
आपकी वाणी जहाँ पहुँची, वहाँ प्रेम का प्रकाश फैल गया।
आपकी दृष्टि जहाँ गई, वहाँ निराशा आशा में बदल गई।
आपके स्पर्श ने टूटे हुए हृदयों को जोड़ा, और आपकी प्रेरणा ने भटकी हुई आत्माओं को मार्ग दिखाया।

हे सतनाम साखी के दिव्य उद्घोषक !

आपने संसार को केवल एक अभिवादन नहीं दिया, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का मंत्र दिया।
"सतनाम साखी"
इन दो शब्दों में सम्पूर्ण वेदान्त समाहित है।
इन दो शब्दों में उपनिषदों का सार छिपा है।
इन दो शब्दों में गुरु नानक की वाणी का प्रकाश है।
इन दो शब्दों में संत कबीर का निर्भीक सत्य है।
इन दो शब्दों में मानव जीवन का परम लक्ष्य निहित है।

हे करुणा के सागर !

आपने कभी किसी से यह नहीं पूछा कि वह कौन है।
आपने केवल यह देखा कि वह दुखी है या सुखी।
आपकी दृष्टि में न कोई छोटा था, न कोई बड़ा।
न कोई ऊँचा था, न कोई नीचा।
आपकी दृष्टि में सभी ईश्वर की संतान थे।
इसीलिए आपका प्रेम किसी सीमा में बंध नहीं सका।
हे सेवा के महायोगी! आपने हमें सिखाया कि
सेवा ही पूजा है। सेवा ही साधना है।
सेवा ही भक्ति है। सेवा ही परमात्मा तक पहुँचने का सरलतम मार्ग है। आपने भूखों को भोजन दिया। निर्धनों को सहारा दिया। अनाथों को अपनापन दिया।
और निराश लोगों को जीवन जीने की नई आशा दी।

हे गुरु महाराज !

रामायण में श्रीराम की करुणा दिखाई देती है।
भगवद्गीता में श्रीकृष्ण का ज्ञान दिखाई देता है।
गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक का प्रेम दिखाई देता है।
और आपके जीवन में करुणा, ज्ञान, प्रेम और सेवा का अद्भुत संगम दिखाई देता है।
आप किसी एक युग के संत नहीं, सभी युगों के मार्गदर्शक हैं।

हमारी प्रार्थना

हे पूज्य गुरुदेव! हमारे भीतर भी वही प्रेम जागृत कर दीजिए जो आपके हृदय में था।
हमारे भीतर भी वही दया उत्पन्न कर दीजिए जो आपकी दृष्टि में थी।
हमारे भीतर भी वही सेवा भावना भर दीजिए जो आपके जीवन का आधार थी।
हमारे भीतर भी वही विनम्रता स्थापित कर दीजिए जो आपके व्यक्तित्व की पहचान थी।
हमारे भीतर भी सतनाम साखी का प्रकाश प्रज्वलित कर दीजिए।

अंतिम प्रणाम

हे गुरु महाराज!
जब तक सिंधु नदी का स्मरण रहेगा,
जब तक प्रेम का एक भी दीपक जलता रहेगा,
जब तक कोई भूखे को भोजन और दुखी को सहारा देता रहेगा,
जब तक मानवता जीवित रहेगी,
तब तक आपका नाम अमर रहेगा।
आप प्रेम प्रकाश परंपरा के आद्य सूर्य हैं।
आप मानवता के आध्यात्मिक सम्राट हैं।
आप करुणा के सागर हैं।
आप सेवा के हिमालय हैं।
आप प्रेम के अमर अवतार हैं।
आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
आपको शत-शत नमन।
आपको बारम्बार वंदन।
धन गुरु टेऊराम। धन सतनाम साखी।

समर्पित
भक्त मोहनलाल दरियानी कानपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

**माता-पिता से मांगने वालों को भिखारी नहीं कहते,
पर दूसरों से मांगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है।**

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 97वां जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

मेरे सतगुरु हरिदास राम ..... आए धरती पर सुखधाम

जयपुर। सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का ९७वां जन्मोत्सव बड़ें ही हर्षोल्लास के साथ श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर दिनांक २७ अप्रेल से १ मई २०२६ तक धूमधाम से मनाया गया । मुख्य कार्यक्रम जयपुर में श्री अमरापुर स्थान पर सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर १ मई पूर्णिमा के दिन प्रातः काल ७ बजे से प्रारंभ हुए भक्ति के सरोवर में नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की महिमा का गुणगान, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रवचन कैसेट का श्रवण, भगवान श्री सत्यनाराण जी की कथा, श्रीमद् भगवद् गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठों का भोग पारायण, दीप प्रजज्वलन, महाप्रसादी भोग, बधाई गीत के साथ आदि धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ ।

प्रेम प्रकाश मंडल के चतुर्थ पीठाधीश्वर श्री सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज मर्यादा की मूरत थे, सादगी, निर्भिकता, समय के पाबंद आदि गुण उनमें विद्यमान थे ! उनके ९७वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में विशेष सेवा के प्रकल्प आयोजित किये गये ।

सेवा से झलकी स्वामी हरिदास राम महाराज की मूर्त

आचार्य श्री की शिक्षाओं की करी अनुपालना

पंच दिवसीय जन्मोत्सव पर सेवा के संकल्प को सार्थक करते हुए पूज्य स्वामी मोहनप्रकाश जी महाराज के सान्निध्य में पंच दिवसीय जन्मोत्सव पर अमरापुर अन्न भोजन प्रसादम, एस. एम. एस .हॉस्पिटल के बाहर नमकीन पुलाव के साथ साथ राहगीरों को छाछ, लस्सी, शर्बत, मिल्करोज, फल इत्यादि वितरित किए गए। सेवा के क्रम में क्रमशः निर्माण नगर आश्रम केयर होम अनाथालय में निराश्रित बच्चों को फ्रूटी, छाछ, फल अध्ययन संबंधित पाठ्य सामग्री भेंट दी गई वही एस एफ एस मानसरोवर में सतगुरू स्वामी हरिदासराम उद्यान में राहगीरों को छाछ, लस्सी , शर्बत ,फल आदि वितरित किए गए । उत्सव की पूर्णाहुति पर कुष्ठ आश्रम में रोगियों के लिए भोजन ,फल भेजा गया ।

हजारों भक्तों ने चखा गुरु का प्रसाद

पूर्णिमा तिथि पर पंच दिवसीय जन्मोत्सव की पूर्ण आहुति पर विशाल आम भंडारे का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्तों ने गुरुदरबार में शीश निवा गुरु का प्रसाद चखा ।

इस पंच दिवसीय उत्सव के उपलक्ष में अनेकों सेवा कार्य किये गये । जिनमें परिंडा पात्र वितरण (पक्षियों के लिये जलपात्र), गौशाला में गो सेवा घास फल गुड़ आदि खिलाए गए एवं समापन के तहत श्री अमरापुरा स्थान के बाहर निरंतर चल रहे अन्न क्षेत्र पर पुलाव प्रसाद एवं शीतल जल के साथ छाछ, एवं मिष्ठान वितरित किया गया । संतो ने गुरु महाराज जी के जन्मोत्सव की सभी भक्तो को अनन्त अनन्त बधाईयां दी !!

इसी प्रकार अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी जन्मोत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया । विभिन्न सेवा-प्रकल्प सभी स्थानों पर किये गये । जिसमें अन्नक्षेत्र-शर्बत-जल-छाछ वितरण सेवा, गौसेवा एवं अन्य

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

मोहरूपी घोर अन्धकार को नाश करने के लिये आत्म-ज्ञान रूपी दीपक की ही आवश्यकता होती है। यह आत्म-ज्ञान रूपी दीपक ब्रह्मनेष्ठी और ब्रह्मश्रोत्रिय देहधारी सद्गुरु ही दे सकता है।

कुरुक्षेत्र में 700 श्लोकी हवन अनुष्ठान सम्पन्न

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र तीर्थ के ज्योतिसरोवर (जहां श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को गीता का ज्ञान-उपदेश दिया था) उसी स्थान पर 17 मई (रविवार) 2026 को परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य संत मण्डली के पावन सानिध्य में 700 श्लोकी महायज्ञ अनुष्ठान किया गया ! सर्वप्रथम भगवान एवं गुरुजनों के विग्रहों को माल्यार्पण कर पूजा की गयी तत्पश्चात् हवन प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम के बाद साधु-सन्तों का भोजन-भण्डारा भी किया गया जिसमें साधु सन्तों को भोजन कराकर यथायोग्य भेंटादि दी गयी। कार्यक्रम में जयपुर, दिल्ली, समालखा, पलवल, ग्वालियर एवं अन्य शहरों से काफी संख्या में प्रेमीगण शामिल हुए।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिस गंदे शरीर पर गर्व करते हो वह तो एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा।

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम चालीसा प्रारंभ

चहुं ओर मच रही सांई सांई टेऊँराम चालीहा महोत्सव की धूम

जयपुर । हम सभी प्रेम प्रकाशियों के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं देश विदेश स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर सांई टेऊँराम महाराज का चालीसा महोत्सव का शुभारम्भ मंगलवार दिनांक ०६ जून २०२६ को बड़े ही धूमधाम से हुआ।

प्रातःकाल की बेला में ५ बजे हवन-यज्ञ अनुष्ठान के साथ चालीसा महोत्सव का शुभारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति सांई टेऊँराम जन्मोत्सव १६ जुलाई को होगी । चालीसा की शुरुआत ब्राह्मणों द्वारा विधिवत श्री मंदिर में पूजा-अर्चना कराके संत महापुरुषों एवं श्रद्धालु भक्तों को तिलक लगाकर रोली मोली बांध कर की गयी। श्री मंदिर में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के श्री विग्रहों की विधिवत पूजन कर नवीन पोशाक धारण करा पुष्प, इलायची की माली, मिष्ठान्न अर्पित किया गया । इस अवसर पर श्री मन्दिर में मोगरे के फूलों की झांकी सजाई गयी, समाधि स्थल पर विशेष ऋतु पुष्पों का श्रृंगार किया गया । प्रातः कालीन वेला में उपस्थित हजारों भक्तों नें रक्षा सूत्र बंधवा कर आचार्य श्री के समक्ष अपनी मनोकामना रखी । इस अवसर पर संतों ने बताया कि चालीहा के व्रत को धारण करने वाले प्रेमियों को मोली बंधवाना आवश्यक है और इस मोली को १६ जुलाई को स्वामी टेऊँराम जन्म जयंती पर तुलसी पत्र ग्रहण कर खोला जायेगा । हजारों प्रेमीजन अपनी शुभेच्छाओं की पूर्ति हेतु चालीहा महोत्सव में व्रत-साधना कर रहे हैं इसमें भी महिला वर्ग की संख्या बहुतायत में है. विभिन्न धार्मिक पंथीय अनुष्ठान किये जा रहे हैं. हर ओर हर्षोल्लास छाया हुआ है. दरबार पर व घर-घर सद्गुरु टेऊँराम चालीसा का पाठ विशेष आयोजन करके किया जा रहा है. सेवा कार्यों के तहत विभिन्न लोकोपयोगी कार्य सेवा मण्डलियों द्वारा किये जा रहे हैं. जिसमें अन्नक्षेत्र, वानर भोज, गौसेवा, अस्पताल में मरीजों को फल-भोजन वितरण, वृद्धाश्रम में सेवा कार्य एंव अन्य सेवा प्रकल्प किये जा रहे है । चारों ओर देखो आनन्द ही आनन्द छाया हुआ है ।

श्री अमरापुर स्थान में प्रतिदिन ४० दिन तक रोजाना सुबह ५.५० से ६.३० तक (४० मिनिट) हवन यज्ञ अनुष्ठान तत्पश्चात् नित्य-नियम प्रार्थना, सांई टेऊँराम बाबा की महिमा का गुणगान संतों द्वारा किया जा रहा है । समाधि स्थल को प्रतिदिन ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित किया जा रहा है ।

देश-दुनिया के लगभग समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में सद्गुरु टेऊँराम चालीहे को अति उत्साह उमंग से प्रेमियों द्वारा संतों के पावन सानिध्य में मनाया जा रहा है. इसके लिए श्रद्धालु भक्तों में असीम उत्साह देखा जा रहा है. समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों/मंदिरों में विशेष शृंगार दर्शनार्थी भक्तों को मंत्रमुग्ध कर रहा है.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 84वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य, मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ८४वाँ वर्सी उत्सव प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर दरबार (डिब्) जयपुर सहित समूची देश-दुनिया के प्रेम प्रकाश आश्रमों में बड़े ही श्रद्धाभाव के साथ १६ जून से २० जून २०२६ तक मनाया गया. इस अवसर पर पंचदिवसीय श्रीमद्भगवत्गीता व प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का पारायण हुआ. विशेष सत्संग सभाओं में पूज्य संत मण्डल, विद्वानों, कवियों, भजनीकों ने आचार्यश्री के मंगलमय प्रेरक जीवन दर्शन पर सत्संग प्रवचनों भजनों कविताओं के माध्यम से प्रकाश डाला. अनेक आश्रमों पर अंतिम दिवस २० जून को आम भण्डारे हुए.

श्री अमरापुर दरबार के अलावा प्रमुख कार्यक्रम आदर्श नगर अजमेर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ.

छोटी काशी गुलाबी नगरी में आस्था भक्ति के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का पावन ८४ वा महानिर्वाण उत्सव (वरसी उत्सव) श्रद्धा भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ। श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब, श्री मदभगवत गीता जी के पाठों के भोग परायण के साथ विशाल आम भंडारे का आयोजन हुआ !

चार मुख्य दिवस का हुआ अनोखा संगम

''शुभ शनिवार साप्ताहिक जन्म, मासिक जन्म चौथ पर्व, निर्वाणोत्सव पुण्य तिथि एवं चालीहा महोत्सव'' एक साथ चतुर्थ दिवसों का अनोखा संगम अद्भुत रहा ,

प्रातः ६ से ६.४० तक हवन यज्ञ अनुष्ठान के पश्चात ७ से ११ बजे तक नित्य नियम प्रार्थना ,संत महात्माओं द्वारा आचार्यश्री की महिमा का गुणगान, सत्संग, प्रवचन, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ, गीता जी के पाठों के भोग परायण के साथ विशाल आम भंडारे का आयोजन हुआ । जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गुरु दरबार पर शीश निवा कर गुरु का प्रसाद भोजन प्रसाद चखा ! उत्सव में स्वामी मोहनलाल जी महाराज, भगत जीतूराम जी, पुंडरीक शास्त्री जी, संत नवीन जी, संत हरीश जी, संत गुरुदास जी आदि संतो ने सदगुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित आध्यात्मिक वाणी के दोहे पद छंद भजन कवित आदि का संगीतमय गान किया !

रक्तदान हुआ आयोजन, 52 यूनिट रक्त एकत्रित

सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ८४ वे महानिर्वाण दिवस पर श्री अमरापुर नवयुवक मंडल श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में स्वेच्छा से श्रद्धालुओं ने रक्तदान किया। शिविर में लगभग ५२ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ । सेवा संकल्प कार्यों के अंतर्गत पुण्य तिथि पर कुष्ठ आश्रमों में भोजन सेवा की गई, श्री अमरापुर अन्न भोजन प्रसादम पे पुलाव के साथ साथ राहगीरों को शर्बत और छाछ वितरण की गई ! सदगुरु टेऊँराम जी महाराज की समाधि स्थल को पुष्पों से सजाया गया । दिनभर भक्तों का दर्शनों के लिए तांता लगा रहा !!

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

जानने योग्य बातें

शास्त्रों के अनुसार सन्तान कितने प्रकार की होती हैं ?

आज एक प्रश्न मेरे पास आया था की मेरी सन्तान मुझे बहुत दुःख दे रही हैं, क्या सन्तान ऐसी ही होती हैं?

दरअसल पौराणिक मान्यतानुसार सन्तान के ५ प्रकार होते हैं । इस सम्बन्ध मे नीचे बता रहा हूँ । सबसे पहले आपको समझा दे कि आपकी सन्तान क्यों आपको दुःख दे रही हैं ।

दरअसल हम जो बोते हैं ,वही हम काटते भी हैं । अक्सर हम अपने माँ बाप की इज्जत, उनकी मर्यादा, उनका सम्मान, उनकी कोई अहमियत नही समझते । हम अपने आप को इस नए युग का पढ़ा लिखा समझकर ये मानने लग गए हैं की हमारे माँ पिता जाहिल ,गंवार और पुरानी पीढ़ी के हैं, और उनकी सीख, संस्कार को परम्परागत चलाना जाहिलपन समझते हैं ।

जब भी हमारे माँ पिता का दिल दुखता हैं ,तब एक टीस सी मन मे से निकलती हैं, आपके माँ बाप आपके सामने तो कुछ नही कहेगे पर मन ही मन तड़पते हैं। जब घर की बहू अपने सास ससुर का सम्मान नही करती ,आदर नही देती, बात बात पर गुस्सा करती तो सास ससुर के दिल से एक तड़प की आह निकलती हैं ।

जब ये आह, टीस इकट्ठी हो जाती हैं, तो ये हमारे जीवन मे काँटा बनकर हमारी सन्तान के रूप मे आती हैं, और फिर हमारा जीवन दुःख से नारकीय बन जाता हैं ।

ये हो सकता हैं की हमारे माता पिता कम पढ़े लिखे हो, कम समझदार हो, पर आज हम उनकी ही बदौलत जीवन मे आये हैं, उनके ही कारण आज किसी स्टेट्स पर खड़े हैं, आज हम उनसे हैं, वो हमसे नही । लेकिन आज की पीढ़ी , हे भगवान ।

जब आप अपने माँ बाप की सेवा नही करते, और अपने बच्चे से परेशान होकर भगवान के मन्दिर जाते हैं, तो भगवान भी आखिर कह ही देते हैं की जब तू अपनो का नही हुआ तो मेरा क्या होगा ?

फिर हम भटकते रहते हैं कुंडली लेकर इस ज्योतिष से उस ज्योतिष के पास, एक उपाय, दो उपाय, दस उपाय पर पल भर की शान्ति फिर ढाक के तीन पात ।

खैर मेरा विषय ये नही हैं मेरा विषय हैं की सन्तान कितने प्रकार की होती हैं । सन्तान ५ प्रकार की बताई गयी हैं।

1. ऋणानुबंधी:- जब हम वक्त पढ़ने पर किसी से कर्ज लेते हैं, और जब हमारे पास धन आ जाता हैं, और हम अपनी नीयत खराब होने के कारण उसे नही देते हैं, तो हमारे यंहा ऐसी औलाद की उत्तपत्ति होती हैं, ये सन्तान कड़वा बोलती हैं, माँ बाप की निंदा करती हैं, उनको बोलने नही देती, कभी कभी मारती भी हैं । दान,धर्म, श्राद्ध आदि पर विश्वास नही करती ।

2. वैरानुबंधी:- पूर्वजन्म मे किसी को बैर के कारण दुःख पहुचाने के कारण ऐसी सन्तान घर मे जन्म लेती हैं । ऐसी औलाद माँ बाप से बैर जैसा आचरण करती हैं, बचपन से खेल खेल मे ही मार कर भाग जाना, गुस्से मे भरा होना, जली कटी सुनाते रहना । सुख की नींद नही दुःख देना आदि दुष्कर्म कर माँ बाप को खत्म कर देता हैं ।

3. उपकारानुबंधी:- सबसे अच्छी सन्तान, पर कम ही पायी जाती हैं । यदि आपने पिछले जन्म मे कोई सद्कर्म, उपकार किये हो तो ऐसी सन्तान आपके घर आती हैं । जो

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश
जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है,
तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बान्ध नहीं सकते।

हर पल माँ बाप की सेवा करती हैं। भक्ति और स्नेह के साथ रहती हैं। बीमार होने पर उनकी सेवा करती हैं और मृत्यु पश्चात भी उनके सम्मान मे किसी अस्पताल, धर्मशाला, स्कूल आदि की स्थापना कराती हैं।

4. उदासीन:- जो सन्तान किसी का भला बुरा नही करती, अपने काम से काम, राम से राम करती हैं। न किसी को कोई दान देती, न किसी से कुछ मांगती, अपना जीवन उदासीन की तरह गुजारती हैं।

5. न्यासानुबंधी:- जब हम किसी अपनों की, दोस्तों की अमानत मे खयानत करते हैं, किसी की धरोहर को लालचवश हड़प जाते हैं तब ऐसी सन्तान की उत्तपत्ति होती हैं। ऐसी सन्तान बहुत प्यार का दिखावा करती हैं, और धीरे धीरे हमसे हमारी सारी सम्पत्ति वसूल कर बुरी आदतो मे पढ़कर बर्बाद कर देती हैं, और आखिर मे कम उम्र मे मृत्यु पा जाती हैं।

अब आपकी जिंदगी मे किस प्रकार की सन्तान हैं, आप खुद निर्णय करे। रही बात उन सन्तान की पीढ़ा से कैसे मुक्ति पाये ये अलग विषय हैं।

पावन प्रेरणा-प्रसंग

सफलता का सूत्र

एकाग्र होकर, सब ओर से दृष्टि समेटकर एकमात्र लक्ष्य (ध्येय) पर ध्यान केन्द्रित करने वाला ही सफल होता है. एक बार शस्त्रगुरु द्रोणाचार्य ने एक पक्षी-यन्त्र (कृत्रिम चिड़िया) बनाया और उसे एक वृक्ष पर लटका दिया. उन्होंने सभी शिष्यों से उसकी आँख का निशाना साधने को कहा. गुरु द्रोण क्रमशः शिष्यों को आह्वान करते, कुछेक प्रश्न कर उन्हें लौटा देते. युधिष्ठिर से भी उन्होंने पूछा, 'क्या दिखायी दे रहा है?' उन्होंने बताया, 'यह विशाल वृक्ष, उसकी शाखाएँ, उसमें बैठा पक्षी और ऊपर अनन्त आकाश!' गुरु द्रोण ने उनसे भी तीर रख देने को कहा. दुर्योधन से भी यही पूछा, 'क्या दिखायी देता है?' वह तमककर बोला, 'सब गुरुभाई दिखाई दे रहे हैं, आपको भी देख रहा हूँ और पक्षी को भी देख रहा हूँ, आदेश दें!' उससे भी बाण रख देने को कहा.

अन्त में अर्जुन की बारी आयी. उससे भी गुरुदेव ने पूछा, 'क्या दिखायी दे रहा है?' जवाब था, 'गुरुदेव! केवल आँख.' आदेश मिला, 'चलाओ बाण!' सन्नसे तीर आँख बेधता निकल गया. प्रसन्न आचार्य ने अर्जुन को गले लगा लिया. एक दिन यही छात्र अर्जुन विश्व का अद्वितीय धनुर्धर बना.

अतः विद्यार्थी का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिये और उसकी प्राप्ति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिये. ऐसे लोग ही सफल होते हैं.

शिक्षा में प्रेरणा और लगन का महत्त्व

प्रतिभा प्रत्येक विद्यार्थी में होती है. शिक्षक उनके प्रसुप्त प्रतिभाओं को जागृत करते हैं. प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान कर सम्भावनाओं के द्वार खोल देते हैं. अपनी लगन के अनुसार ही विद्यार्थी उसे ग्रहण करते हैं. गुरु द्रोणाचार्य ने एक-जैसी ही शिक्षा सभी शिष्यों को दी थी; किन्तु प्रवीण हुए अर्जुन!

वृत्तान्त है- भैया भीम के साथ बैठकर अर्जुन रात्रिकालीन भोजन कर रहे थे. अकस्मात् प्रकाश की व्यवस्था भंग हो गयी. अँधेरा हो गया. अर्जुन घबराये- अब मैं भोजन कैसे करूँगा? किन्तु स्वभाववश हाथ उठा, ग्रास मुँह में चला गया. वह बोले, 'भैया! दिखायी तो नहीं देता, फिर भी मेरा हाथ सीधे मुँह में ही जाता है. ऐसा क्यों?' भीम ने कहा, 'अभ्यास अर्जुन! अभ्यास! इसका अभ्यास हो गया है; इसलिये भोजन ठोढ़ी या नाक का स्पर्श न कर सीधे मुँह में जाता है.'

बस! अर्जुन को प्रेरणा मिल गयी. वह दिन के उजाले में वटवृक्ष के पत्रों पर निशान बना लेते थे और अर्धरात्रि के घने अँधेरे में उन पर तीर चलाते थे. एक दिन धनुष की टंकार गुरु द्रोण के कानों में पड़ी. उन्होंने देखा, अर्जुन अर्धरात्रि के घने अँधेरे में भी सन्न-सन्न सही लक्ष्यावेध कर रहा है. गुरु द्रोण अवाक्! 'अर्जुन! यह विद्या तो हमने कभी नहीं सिखायी.' अर्जुन बोले, 'गुरुदेव! शिक्षा तो आपने ही दी थी. हाँ, प्रेरणा भैया भीम के भोजन-वार्ता से मिली.'

लोकोक्ति है- **'होनहार बिरवान के होत चींकने पात'** अर्थात् भविष्य में उन्नति करने वालों के लक्षण पहले से ही दीखने लगते हैं. अर्जुन ऐसा ही विद्यार्थी था. वह विश्व का महान् धनुर्धर बना और महाभारत युद्ध में विजयश्री प्राप्त की.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश आप भक्ति, शुभ कर्म का बीज बोते जाओ कोई न कोई दाना अवश्य उगेगा।

!! दया की महिमा !!

एक बहेलिया था। चिड़ियों को जाल में या गोंद लगे बड़े भारी बाँस में फँसा लेना और उन्हें बेच डालना ही उसका काम था। चिड़ियों को बेचकर उसे जो पैसे मिलते थे, उसी से उसका काम चलता था।

एक दिन वह बहेलिया अपनी चद्दर एक पेड़ के नीचे रखकर अपना बड़ा भारी बाँस लिये किसी चिड़िया के पेड़ पर आकर बैठने की राह देखता बैठा था। इतने में एक टिटिहरी चिल्लाती दौड़ी आयी और बहेलिये की चद्दर में छिप गयी।

टिटिहरी ऐसी चिड़िया नहीं होती कि उसे कोई पालने के लिये खरीदे। बहेलिया उठा और उसने सोचा कि अपनी चद्दर में से टिटिहरी भगा देना चाहिये। इसी समय वहाँ ऊपर उड़ता एक बाज दिखायी पड़ा। बहेलिया समझ गया कि यह बाज टिटहरी को पकड़ कर खा जाने के लिये झपटा होगा, इसी से टिटिहरी डरकर मेरी चद्दर में छिपी है। बहेलिये के मन में टिटिहरी पर दया आ गयी। उसने ढेले मारकर बाज को वहाँ से भगा दिया। बाज के चले जानेपर टिटिहरी चद्दर से निकलकर चली गयी।

कुछ दिनों पीछे बहेलिया बीमार हुआ और मर गया। यमराज के दूत उसे पकड़कर यमपुरी ले गये। यमपुरी में कहीं आग जल रही थी, कहीं चूल्हे पर बड़े भारी कड़ाही में तेल उबल रहा था। पापी लोग आग में भूने जाते थे, तेल में उबाले जाते थे। यमराज के दूत पापियों को कहीं कोड़ों से पिटते थे, कहीं कुल्हाड़ी से काटते थे। और भी भयानक कष्ट पापियों को वहाँ दिया जाता था। बहेलिये के वहाँ जाते ही, वहाँ सैकड़ों, हजारों चिड़ियाँ आ गयीं और वे कहने लगीं- 'इसने हमें बिना अपराध के फँसाया और बेचा है। हम इसकी आँखें फोड़ देंगी और इसका मांस नोच-नोचकर खाएँगी।'

बेचारा बहेलिया डर के मारे थर-थर काँपने लगा। उसी समय वहाँ एक टिटिहरी आयी। उसने हाथ जोड़कर यमराज से कहा- 'महाराज! इसने बाज से मेरे प्राण बचाये हैं। इसको आप क्षमा करें।'

यमराज बोले- 'यह बड़ा पापी है। सब चिड़ियाँ इसे नोचेंगी और फिर इसे जलाया जायगा और कुल्हाड़ों से काटा जायगा। लेकिन यह छोटी टिटिहरी इसको बचाने आयी है। इसने एक बार इस चिड़िया पर दया की है। इसलिये इसको अभी संसार में लौटा दो और इसे एक वर्ष जीने दो।'

यमराज के दूत बहेलिये के जीव को लौटा लाये। बहेलिये के घरके लोग उसकी देह को श्मशान ले गये थे और चितापर रखनेवाले थे। वे लोग रो रहे थे। इतने में बहेलिया जी गया। वह बोलने और हिलने लगा। उसके घर के लोग बहुत प्रसन्न हुए और उसके साथ घर लौट आये।

बहेलिये को यमराज की बात याद थी।उसने चिड़िया पकड़ना छोड़ दिया। अपने भाइयों से भी चिड़िया पकड़ने का काम उसने छुड़ा दिया। वह मजदूरी करने लगा। सबेरे और शाम को वह रोज चिड़ियों को थोड़े दाने डालता था। बहुत-सी चिड़ियाँ उसके दाने खा जाया करती थीं। अब रोज वह भगवान् की प्रार्थना करता था और भगवान् का नाम जपता था। इससे बहेलिये के सब पाप कट गये। एक वर्ष बाद जब वह मरा, तब उसे लेने देवताओं का विमान आया और वह स्वर्ग चला गया।

शिक्षा :-

मित्रों, तुम्हें भी किसी भी जीवन को कष्ट नहीं देना चाहिये। सभी जीवों पर दया करनी चाहिये। जो जीवों पर दया करता है, उस पर भगवान् प्रसन्न होते हैं।

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी जब कोई सांसारिक पदार्थो एवं कार्यो का त्याग करता है तब वह परमात्मा के निकट होता है।

सेहत बरसात के मौसम में स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

बरसात का मौसम हमारे जीवन में सुंदरता और ताजगी का एहसास लाता है, लेकिन इसी समय विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, इस मौसम में अपने स्वास्थ्य को अच्छी तरह से रखने के लिए निम्नलिखित सुझावों का पालन करें-

1. प्रभावी हाथ-पैर देखभाल- बरसात के मौसम में हमारे हाथ और पैर आसानी से नम हो जाते हैं और संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। सुनिश्चित करें कि आप हर बार अच्छे साबुन और पानी से हाथों और पैरों को धोते हैं, और साफ और सूखे जूते पहनें। इसके अलावा, एंटीफंगल पाउडर का उपयोग करने से फफोले और संक्रमण की संभावना कम होती है।

2. स्वच्छता का ध्यान रखें- बरसाती मौसम में हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारा वातावरण स्वच्छ और स्वस्थ्य रहे। इसके लिए, अपने आसपास के इलाके को साफ और सुरक्षित रखें। स्टैग्नेंट पानी को रोकने के लिए जल जमाव को निर्माण करें और मच्छरों के काटने से बचने के लिए मच्छर रिपेलेंट का उपयोग करें।

3. पोषक आहार का सेवन करें- इस मौसम में अपनी इम्यूनिटी को मजबूत रखने के लिए पोषक आहार का सेवन करना महत्वपूर्ण है। फल और सब्जियों को अधिकतम मात्रा में खाएं, क्योंकि वे आपको पोषण प्रदान करेंगे और अन्य संक्रमणों से लड़ने में मदद करेंगे। हल्के और पौष्टिक भोजन करें और बाहर का खाना कम खाएं।

4. पानी की पर्याप्त मात्रा पिएं- बरसात के मौसम में बारिश के चलते अधिक पसीना बहता है और इसलिए हमें अपने शरीर की पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। साफ पानी पीने से शरीर में विषाक्त पदार्थों का निकाल जाता है और स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिलती है।

5. बारिशी ब्यूटी टिप्स का पालन करें- इस मौसम में स्किन की देखभाल और बालों की देखभाल का खास ध्यान रखें। अपने चेहरे को स्क्रब के द्वारा नियमित रूप से साफ करें और नमी के लिए मॉइस्चराइजर का उपयोग करें। बारिश के दिनों में अपने बालों को डायरेक्ट बारिश से बचाएं और उन्हें सूखा रखें।

6. व्यायाम करें- बरसात के मौसम में भी नियमित व्यायाम का पालन करें। योग और अभ्यास करने से शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है। घर में या जिम में ही व्यायाम करने की कोशिश करें और सुरक्षित रहें।

7. संक्रमण से बचाव- बरसाती मौसम में संक्रमण का खतरा बढ़ता है, इसलिए अपने आसपास की साफ-सफाई और व्यक्तिगत स्वच्छता का खास ध्यान रखें। हाथों को नियमित रूप से साबुन से धोएं और अपने चेहरे को हर रात को साफ करें। मास्क पहनें और सामाजिक दूरी बनाए रखें ताकि किसी संक्रमित व्यक्ति से संपर्क न हो।

इन सुझावों का पालन करके आप बरसात के मौसम में अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं। याद रखें, स्वस्थ रहना हमारे जीवन की अग्रणीता होनी चाहिए।

डॉ. विपुल टेकवानी
(BNYS, MD Acu, CMSED)

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सेवा का जो कार्य है वह बहुत कठोर होता है जो योगियों को भी दुर्लभ मिलता है, इसे अपना कर्तव्य समझकर ही करना चाहिए।

मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना....

मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना,
बेशक दुनियाँ रूठे मुझसे, तुम ना मुझे भुलाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना.।

1.ना हुनर कोई है मुझमें, ना समझ ज्ञान है कोई,
तेरी,कृपा-दृष्टि को पाकर, जागी मेरी किस्मत सोई,
मैं कितना खुशकिस्मत हूँ-2, ये कहता सकल जमाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना,
बेशक दुनियाँ रूठे मुझसे, तुम ना मुझे भुलाना,

2.तेरे दर पे आता है जो, खाली ना जाता है वो,
अपने जख्मों का मरहम, तुमसे ही पाता है वो,
बस,तेरी चरणरज सत्गुरू-2,अब मुझको भी है पाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना,
बेशक दुनियाँ रूठे मुझसे, तुम ना मुझे भुलाना,

3.टेऊँराम सा जोगी ना कोई, ये सारा जग कहता है,
चाहे बैठे हों अमरापुर, पर ध्यान इन्हें सब का है,
बिगड़ी बनाई कितनों की-2, मैं भी हूँ तेरा दीवाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना,

4.जब तक है कृपा तेरी, मैं चलता ही जाऊँगा,
तेरे नाम का सिमरन करके, मैं तेरा दर पाऊँगा,
गर गिरने लगे कहीं'वधवा'-2, तो तुम ही मुझे उठाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले, सोया नसीबा जगाना,
बेशक दुनियाँ रूठे मुझसे, तुम ना मुझे भुलाना,
मेरे सत्गुरू प्यारे, मेरी भी बिगड़ी बनाना,
मेरे खण्डू वाले,सोया नसीबा जगाना.।।

यही है मेरा सपना सत्गुरु, यही मेरी अभिलाषा,यही है.

यही है मेरा सपना सत्गुरु, यही मेरी अभिलाषा,यही है...
हर इक पर किरपा हो तेरी, रहे ना कोई प्यासा,
यही है मेरा सपना सत्गुरु, यही मेरी अभिलाषा, यही है...

1.सब पर रहमत करना सतगुरु,
चलें नेक रस्ते पर, हम चलें नेक....
रूखा-सूखा खाऐं बेशक,
नाम नहीं विसरे पर, नाम नहीं....
हर मन मंगल दीप जलें और-2
रहे ना कोई निराशा.....
यही है मेरा सपना सतगुरु,
यही मेरी अभिलाषा, यही है....
हर इक पर किरपा हो तेरी, रहे ना कोई प्यासा,
यही है मेरा सपना सत्गुरु, यही मेरी अभिलाषा.....।

2.आँसू दो तो ऐसे देना,
याद में तेरी बरसें, याद में तेरी....
मुरझाई सी मन की कली मेरी,
हरदम खिल-खिल हरषे, हरदम...
तेरी दया का हर प्रेमी को-2
मिल जाऐ एक दिलासा......
यही है मेरा सपना सत्गुरू,
यही मेरी अभिलाषा, यही है....
हर इक पर किरपा हो तेरी,रहे ना कोई प्यासा,
यही है मेरा सपना सत्गुरु,यही मेरी अभिलाषा.....।

3.सबके दूर दुखों को कर दो,
सब में आनन्द भर दो, हाँ,सब में.....
नाम में मन लग जाऐ 'वधवा',
सत्गुरु ऐसा वर दो, सत्गुरू....
स्वाँस-स्वाँस हो सिमरन तेरा-2
दो ऐंसा भरवासा....
यही है मेरा सपना सतगुरु, यही मेरी अभिलाषा,
हर इक पर किरपा हो तेरी, रहे ना कोई प्यासा,
यही है मेरा सपना सत्गुरु, यही मेरी अभिलाषा.....।।

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा, समालखा मण्डी, हरियाणा

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश प्रेम का मार्ग सभी मार्गो से सर्वथा भिन्न और विलक्षण है।

अमरापुर गमन

दादा भागचन्द जी

जयपुर। पूज्य सन्त लालूराम जी (इन्दौर) के पिताश्री आदरणीय दादा भागचन्द जी दिनांक १५ जून २०२६ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । आपका पूरा परिवार श्री अमरापुर दरबार की सेवा में समर्पित है । आपकी श्रद्धाजंली सभा में परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने सन्त मण्डल के साथ शामिल होकर पल्लव पाकर दिवंगत आत्मा को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सतगुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज से प्रार्थना की ।

श्री दयालदास जैरामानी

जयपुर। उदारचित्त, मृदुभाषी, कर्मठ श्री दयालदास जैरामानी जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०६ जून २०२६ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । आप श्री अमरापुर दरबार की सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित थे । पूज्य महाराजश्री की यात्रा-दर्शन के दौरान आप श्री अमरापुर दरबार के सत्साहित्य स्टॉल की सेवा में भी सेवारत रहे ।

श्री अशोक कुमार मोटवानी

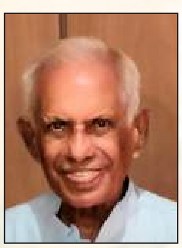

मुंबई । उदारचित्त, कर्मठ, हंसमुख सेवाभावी श्री अशोक कुमार मोटवानी जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०६ मई २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । प्रेम प्रकाश सन्देश की वर्ग पहेली में मुंबई से आप केवल एक मात्र ही सही जवाब भेजा करते थे ।

श्री श्यामलाल तनेजा

ग्वालियर। श्री श्यामलाल तनेजा सुपुत्र अमरापुरवासी श्री सच्चलमल तनेजा दिनांक ०८ जून २०२६ को अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । आपका पूरा तनेजा परिवार पावन गुरुचरणों की सेवा में सेवारत है ।

श्री धनराज मेकूमल मंगवाणी

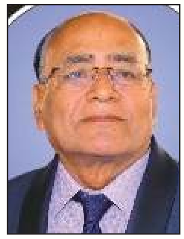

जामनगर। श्री धनराज मंगवाणी सुपुत्र श्री मेकूमल मंगवाणी जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर ८३ वर्ष की आयु में दिनांक ०१ जून २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

माता सरस्वती देवी रामचन्दानी

अजमेर। शांत, कर्मठ सेवाभावी माता सरस्वती देवी रामचन्दानी धर्मपत्नी अमरापुरवासी श्री परमानन्द रामचन्दानी १२ अप्रैल २०२६ को ६३ वर्ष की आयु में अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी । पूजनीय माता को १२ वर्ष की आयु में पूज्य आचार्यश्री का सानिध्य प्राप्त हुआ । अजमेर में देहली गेट पर स्थित आश्रम के सामने आपका घर होने का पूरा लाभ लेकर आपने सन्तों की खूब सेवा की । अजमेर में सभी संतो का सम्मान और सेवा करना अपना कर्तव्य मानती थी ।सत्संग-भजन और सेवा उनकी रग-रग में भरी थी । लगभग ५० वर्षों तक चैत्र मेला, हरिद्वार मेला और कुंभ मेलों पूज्य गुरुदेव भगवान की सेवा में हाजिरी देकर शामिल रहती थी । आपका पूरा परिवार गुरुदरबार और संतों की सेवा में सेवारत है ।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश प्रेम का मार्ग सभी मार्गों से सर्वथा भिन्न और विलक्षण है ।

व्रत–पर्व–उत्सव

17 मई 2026–रविवार–अधिक मास (पुरुषोत्तम) प्रारंभ
18 मई 2026– सोमवार– चन्द्र दर्शन
22 मई 2026– शुक्रवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 मई 2026–बुधवार– कमला एकादशी
31 मई 2026–रविवार– पूर्णिमा
04 जून 2026– गुरुवार– गणेश चर्तुर्थी
09 जून से 19 जुलाई 2026– सांई टेऊँराम चालीसा आरंभ
11 जून 2026– गुरुवार– कमला एकादशी
15 जून 2026– सोमवार– सोमवती अमावस्या
16 जून 2026– मंगलवार– चन्द्र दर्शन
20 जून 2026– शनिवार– सांई टेऊँराम पुण्यतिथि/चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
25 जून 2026– गुरुवार– निर्जला एकादशी
29 जून 2026– सोमवार– पूर्णिमा
03 जुलाई 2026– शुक्रवार– गणेश चर्तुर्थी
11 जुलाई 2026– शनिवार– योगिनी एकादशी
14 जुलाई 2026– मंगलवार– अमावस्या
15 जुलाई 2026– बुधवार– चन्द्र दर्शन

प्रेरक पावन प्रसंग

मैं ना होता तो क्या होता

एक बार हनुमानजी ने प्रभु श्रीराम से कहा कि अशोक वाटिका में जिस समय रावण क्रोध में भरकर तलवार लेकर सीता माँ को मारने के लिए दौड़ा, तब मुझे लगा कि इसकी तलवार छीन कर इसका सिर काट लेना चाहिये, किन्तु अगले ही क्षण मैंने देखा कि मंदोदरी ने रावण का हाथ पकड़ लिया, यह देखकर मैं गदगद् हो गया ! ओह प्रभु! आपने कैसी शिक्षा दी, यदि मैं कूद पड़ता तो मुझे भ्रम हो जाता कि यदि मै न होता तो क्या होता ?

बहुधा हमको ऐसा ही भ्रम हो जाता है, मुझे भी लगता कि यदि मै न होता तो सीताजी को कौन बचाता ?

परन्तु आज आपने उन्हें बचाया ही नहीं बल्कि बचाने का काम रावण की पत्नी को ही सौंप दिया।

तब मै समझ गया कि आप जिससे जो कार्य लेना चाहते हैं, वह उसी से लेते हैं, किसी का कोई महत्व नहीं है

आगे चलकर जब त्रिजटा ने कहा कि लंका में बंदर आया हुआ है और वह लंका जलायेगा तो मै बड़ी चिंता मे पड़ गया कि प्रभु ने तो लंका जलाने के लिए कहा ही नही है और त्रिजटा कह रही है तो मै क्या करुं ?

पर जब रावण के सैनिक तलवार लेकर मुझे मारने के लिये दौड़े तो मैंने अपने को बचाने की तनिक भी चेष्टा नहीं की, और जब विभीषण ने आकर कहा कि दूत को मारना अनीति है, तो मै समझ गया कि मुझे बचाने के लिये प्रभु ने यह उपाय कर दिया !

आश्चर्य की पराकाष्ठा तो तब हुई, जब रावण ने कहा कि बंदर को मारा नही जायेगा पर पूंछ मे कपड़ा लपेट कर घी डालकर आग लगाई जाये तो मैं गदगद् हो गया कि उस लंका वाली संत त्रिजटा की ही बात सच थी, वरना लंका को जलाने के लिए मै कहां से घी, तेल, कपड़ा लाता और कहां आग ढूंढता, पर वह प्रबन्ध भी आपने रावण से करा दिया, जब आप रावण से भी अपना काम करा लेते हैं तो मुझसे करा लेने में आश्चर्य की क्या बात है !

इसलिये हमेशा याद रखें कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह सब ईश्वरीय विधान है, हम और आप तो केवल निमित्त मात्र हैं, इसीलिये कभी भी ये भ्रम न पालें कि........मै न होता तो क्या होता?

संकलित

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश साक्षी चेतन अगामी, अनामी, न दास न स्वामी है। वह तेरा निज स्वरूप है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम मई 2026 से जुलाई 2026 तक

17 मई 2026	कुरुक्षेत्र धाम
18 मई 2026	दिल्ली
19 मई 2026	यात्रा
20 मई से 24 मई 2026	ऑस्ट्रेलिया
25 मई 2026	यात्रा
26 मई से 29 मई 2026	सिंगापुर
30 मई से 03 जून 2026	जकार्ता (इंडोनेशिया)
04 जून 2026	यात्रा
05 जून से 08 जून 2026	हांगकांग
09 जून से 14 जून 2026	बैंकाक
15 जून 2026	यात्रा
16 जून 2026	जयपुर (सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज वर्सी उत्सव पाठ आरंभ)
17 से 20 जून 2026	अजमेर (सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज वर्सी उत्सव)
26 जून	खैरथल
27 जून प्रातः काल	खैरथल
27-28 जून 2026	जयपुर
29-30 जून 2026	उज्जैन
1-2 जुलाई 2026	इन्दौर
3-4 जुलाई 2026	मुम्बई
5-6 जुलाई 2026	नासिक
6 जुलाई 2026 सायंकाल	औरंगाबाद
7-8 जुलाई 2026	अमरावती
9 जुलाई 2026 प्रातः काल	नागपुर
9 जुलाई 2026 सायं काल	पलवल
10-11 जुलाई 2026	प्रयागराज

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

आप चाहे महान शिक्षाशास्त्री बनें, हजारों पुस्तकें पढ़ें परन्तु प्रभु के प्रेम व भक्ति के बिना आपका ज्ञान किसी काम का नहीं है।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी' सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अप्रैल २०२६ अंक खां अगिते-

।। दशपदी-19 ।।

राम रमत सब हृदय अन्तर, नटवर कौतुक करे निरन्तर।
बहु विधि प्रभुहीं खेलत खेला, कहँ बिछुड़त कहँ करते मेला।
ज्यों तिस भावे बाज़ी लावे, कहां प्रकट कहां आप छिपावे।
स्वांगी ज्यों बहु स्वांग बनावे, कहँ स्वामी कहँ दास कहावे।
बाज़ी नट दृष्टा सब सोई, कह टेऊँ है और न कोई।। 3 ।।

"रामु (ईश्वरु) सभिनी जीवनि जे हिर्दे में निवासु करे थो, रहे थो. नाट्य-कला में निपुणु ईश्वरु सदाईं अचिरज जहिड़ा रंग पियो थो ड॒खारे. प्रभू अनेक प्रकारनि सां पंहिंजा खेल पियो थो खेडे॒. परमात्मा किथे जीव खां विछुड़ी थो वञे त किथे अची मेलापु करे थो. बाज़ीगरु भग॒वानु भक्त/जीव जे भाव अनुसार कड॒हिं अची परघटु थिए थो त कड॒हिं पाण खे लिकाए थो छडे॒. ईश्वरु (श्रीकृष्णु) सांगी/ब॒हुरूपी बणिजी सांग थो रचाए, किथे हू स्वामी थो सड॒ाए त किथे पाण खे दासु/ब॒ान्हो थे चवराए". सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि चवनि था,"परमेश्वरु पाण ई बाज़ीगरु, नटु, खेलु ड॒खारींदड़ु आहे त उहो खेलु डि॒संदड़ु बि पाण ई आहे ; अहिड़ो ब॒ियो कोई कोन्हे".

'राम' जो अर्थु आहे ईश्वरु, परमात्मा. रामु सभिनी जीवनि, चल ऐं अचल पदार्थनि में वासो करे थो. हर हंधि, हर स्थान में ईश्वर जो अस्तित्वु आहे. ईश्वरु सचु आहे ऐं सचु ई ईश्वरु आहे. ईश्वर खे घट-घटवासी लेखियो वियो आहे. हीअ सृष्टी ईश्वर जी सुहिणी सृष्टी (सृजन, निर्माण) आहे. जीव, जग॒तु ऐं जग॒दीशु-इहे टेई हिक ई ईश्वरत्व जी अभिव्यक्ती आहिनि. ईश्वरु आहे प्रेमु, ईश्वरु आहे भग॒िती. मनुष जे मन में ईश्वर त आहे पर कस्तूरी मृग (हरण) वांगुरु हुन खे ग॒ोल्हण लाइ मनुषु हेड॒ांहुं होड॒ांहुं ब॒ाहिर पियो भिटिके. ईश्वर खे स्थूल रूप में डि॒सिणो पवंदो आहे ऐं सूक्ष्म/सूख्यम रूप में सुञाणिणो पवंदो आहे. ईश्वर जी प्रापती मानॅ पंहिंजे स्वरूप जी अनुभूती करणु आहे. गुल जी सुग॒ंध गुल में ई हूंदी आहे पर उहा डि॒सण में कान ईंदी आहे, उहा सिर्फु महसूसु करे सघिबी आहे. ईश्वर जो निवासु असांजे हृदय में अहिड़े ई क़िस्म जो आहे. सारी सृष्टीअ जो निर्माता परमेश्वरु हिक परम शक्ती आहे. पंहिंजे अंदरि झाती पाइण सां हुन जो दर्शनु करे सघिजे थो. अहिड़े सर्वेश्वर राम जो सुमिरनु ऐं भज॒नु करणु ज़रूरी आहे. संत तुलसीदासु पंहिंजीअ सुंदर जि॒भ खे चवे थो- **रुचिर रसना, तू राम राम राम क्यों न रटत।**
सुमिरत सुख-सुकृत बढ़त, अघ-अमंगल घटत।।

(हलदंड़ु)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी   प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)